Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ
عِندَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ
الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

(सूरः अन्फ़ाल : 23)

अनुवाद : निश्चित रूप से खुदा के निकट समस्त जीवित प्राणियों में बदतरीन वे बहरे और गूंगे हैं जो अक्ल नहीं करते।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-50

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

29 जमादिउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 14 फ़तह 1402 हिज्री शम्सी, 14 दिसम्बर 2023 ई.

ख़ुत्बः जुमअः

जंग के हालात जिस तेज़ी से शिद्दत इख़्तेयार कर रहे हैं और इसराईल की हुकूमत और बड़ी ताक़तें जिस पालिसी पर अमल करती नज़र आ रही हैं उससे तो आलमी जंग अब सामने खड़ी नज़र आ रही है

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जाना और अपनी बेटी और दामाद को तरग़ीब देना कि वे तहज्जुद भी अदा किया करें इस कामिल यक़ीन पर दलालत करता है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस तालीम पर था जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को चाहते थे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर एक बात के समझाने के लिए सब्र से काम लिया करते थे और बजाय लड़ने के मुहब्बत और प्यार से किसी को उस की ग़लती पर फ़रमाते थे

रातों की दुआएं ही हैं जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल को ज़्यादा खींचती हैं और आजकल तो दुनिया को तबाही से बचाने के लिए उनकी खासतौर पर ज़रूरत है

यहूद के तीनों क़बायल में से जिन्हों ने सबसे पहले मुआहिदे की ख़िलाफ़वरज़ी और ग़द्दारी की वह बनू केनक़ा के यहूदी थे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू केनक़ा को समझाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने बजाय समझने के खुली धमकी देनी शुरू कर दी

"इस मुआहिदा के बाद जो यहूद के साथ हुआ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ास तौर पर यहूद की दिलदारी का ख़्याल रखते थे।"

हालात ख़तरनाक हैं और ख़तरनाक तर होते जा रहे हैं। अगर फ़ौरी हिक्मत वाली पालिसी इख़्तेयार नहीं की गई तो दुनिया की तबाही है

मुस्लमानों की मुश्किलात दूर होने के लिए हमें ख़ास दर्द रखना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि हम मुस्लमानों के लिए दुआ करें।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी के कुछ पहलूओं का वर्णन, ग़ज़व-ए-बनू केनक़ा की तफ़सीलात तथा इसराईल हम्मास जंग के पेश-ए-नज़र दुआ की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 अक्टूबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की जीवनी का वर्णन हो रहा था। रिवायात में आँहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम के अपनी बेटी और दामाद को तहज्जुद की नमाज़ की तरफ़ तवज्जा दिलाने के वाक़िया का बुख़ारी में यूं वर्णन है। हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात उनके और अपनी बेटी हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया क्या तुम दोनों नमाज़ नहीं पढ़ते? तो मैं ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी जानें अल्लाह तआला के हाथ में हैं। जब वह चाहे कि हमें उठाए तो हमें उठाता है। तहज्जुद की नमाज़ का वर्णन हो रहा है। हज़रत अली कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे उसका कोई जवाब नहीं दिया और वापस तशरीफ़ ले गए। फिर मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुना जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस जा रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी रान पर हाथ मारते हुए फ़र्मा रहे थे कि وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا (अल् कहफ़ : 55) कि इन्सान सबसे बढ़कर बेहस करने वाला है।

(सही अल् बुख़ारी किताब التهجد باب تحريض النبی ﷺ علیٰ قیام اللیل والنوافل... नंबर : 1127)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस वाक़िया की तफ़सील इस तरह वर्णन फ़रमाई है कि "एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात अपने दामाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और अपनी बेटी हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा के घर गए और फ़रमाया क्या तहज्जुद पढ़ा करते हो? (अर्थात वह नमाज़ जो आधी रात के क़रीब उठकर पढ़ी जाती है) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पढ़ने की कोशिश तो करते हैं मगर जब ख़ुदा तआला की मंशा के मातहत किसी वक़्त हमारी आँख बंद रहती है तो फिर तहज्जुद रह जाती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तहज्जुद पढ़ा करो और उठकर अपने घर की तरफ़ चल पड़े और रास्ता में बार-बार कहते जाते थे وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا (अल् कहफ़ : 55) यह क़ुरआन-ए-करीम की एक आयत है जिसके अर्थ ये हैं कि इन्सान अक्सर अपनी ग़लती तस्लीम करने से घबराता है और मुख़्तलिफ़ किस्म की दलीलें देकर अपने क़सूर पर पर्दा डालता है। मतलब यह

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

था कि बजाय इस के कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा ये कहते कि हमसे कभी कभी ग़लती भी हो जाती है उन्होंने यह क्यों कहा कि जब ख़ुदा तआला का मंशा होता है कि हम न जागें तो हम सोए रहते हैं और अपनी ग़लती को अल्लाह तआला की तरफ़ क्यों मंसूब किया।"

(दीबाचा तफ़सीरूल क़ुरआन, अनवारूल उलूम भाग 20 पृष्ठ 389-390)

इस बात को मज़ीद खोल कर वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक जगह फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो अपना एक वाक़िया वर्णन फ़रमाते हैं जिससे साबित होता है कि एक अवसर पर जबकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसा जवाब दिया जिसमें बेहस और मुक़ाबला का तर्ज़ पाया जाता था तो बजाय उस के कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ होते या ख़फ़गी का इज़हार करते आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ऐसी लतीफ़ तर्ज़ इख़तेयार की कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ालिबन अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिनों तक उसकी हलावत से मज़ा उठाते रहे होंगे और उन्होंने जो लुतफ़ उठाया होगा वह तो इंही का हक़ था। अब भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इज़हार नापसंदीदगी को मालूम करके हर एक बारीक बैन नज़र हैरत मे डूब जाता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं .. नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात मेरे और फ़ातम अल् ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी थीं और फ़रमाया कि क्या तुम तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ा करते? मैंने जवाब दिया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी जानें तो अल्लाह तआला के क़बज़ा में हैं। जब वह उठाना चाहे उठा देता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात को सुनकर लौट गए और मुझे कुछ नहीं कहा। फिर मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पीठ फेर कर खड़े हुए थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी रान पर हाथ मार कर कह रहे हैं कि इन्सान तो अक्सर बातों में बेहस करने लग पड़ता है।

अल्लाह अल्लाह! किस लतीफ़ तर्ज़ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझाया कि आपको ये जवाब नहीं देना चाहिए था। कोई और होता तो अव्वल तो बेहस शुरू कर देता कि मेरी पोज़ीशन और रुत्बा को देखो फिर अपने जवाब को देखो कि क्या तुम्हें ये हक़ पहुंचता था कि इस तरह मेरी बात को रद्द कर दो। ये नहीं तो कम से कम बेहस शुरू कर देता कि यह तुम्हारा दावा ग़लत है कि इन्सान मजबूर है और उस के तमाम अफ़आल अल्लाह तआला के क़बज़ा में हैं। वह जिस तरह चाहे करवाता है चाहे नमाज़ की तौफ़ीक़ दे चाहे न दे और कहता कि जबर का मसला क़ुरआन शरीफ़ के ख़िलाफ़ है।" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सब कुछ कह सकते थे' लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों तरीक़ में से कोई भी इख़तेयार नहीं किया और न तो उन पर नाराज़ हुए, न बेहस कर के हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके क़ौल की ग़लती पर आगाह किया बल्कि एक तरफ़ हो कर उनके इस जवाब पर इस तरह इज़हार हैरत कर दिया कि इन्सान भी अजीब है कि हर बात में कोई न कोई पहलू अपने मुवाफ़िक़ निकाल ही लेता है और बेहस शुरू कर देता है। हक़ीक़त में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इतना कह देना ऐसे ऐसे मुनाफ़ा अंदर रखता था कि जिसका उश्र-ए-अशीर भी किसी और की सौ बहसो से नहीं पहुंच सकता था। इस हदीस से हमें बहुत सी बातें मालूम होती हैं।' आगे तजज़िया किया है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कि क्या-क्या बातें मालूम होती हैं "जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अख़लाक़ के मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर रोशनी पड़ती है और इसी जगह उनका वर्णन कर देना मुनासिब मालूम होता है। अव्वल तो यह मालूम है कि :

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दीनदारी का किस क़दर ख़्याल था कि रात के वक़्त फिर कर अपने क़रीबियों का ख़्याल रखते थे।

बहुत लोग होते हैं जो ख़ुद तो नेक होते हैं। लोगों को भी नेकी की तालीम देते हैं लेकिन उनके घर का हाल ख़राब होता है और उनमें यह माद्दा नहीं होता कि अपने घर के लोगों की भी इस्लाह करें और इन्ही लोगों की निसबत मिसल मशहूर है कि चिराग़ तले अंधेरा। अर्थात जिस तरह चिराग़ अपने आस-पास तमाम इश्याय को रोशन कर देता है लेकिन ख़ुद उस के नीचे अंधेरा होता है इसी तरह ये लोग दूसरों को तो नसीहत करते फिरते हैं मगर अपने घर की फ़िक्र नहीं करते कि हमारी रोशनी से हमारे अपने घर के लोग क्या फ़ायदा उठा रहे हैं मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस बात का ख़्याल मालूम होता है कि उनके अज़ीज़ भी इस नूर से मुनव्वर हों जिससे वह दुनिया को रोशन करना चाहते थे और इस का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रतिभूति भी करते थे और उनके इमतेहान और तजुर्बा में लगे रहते थे और तर्बीयत اَعِزَّاء एक ऐसा आला दर्जा का जोहर है जो अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में न होता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ में एक क़ीमती चीज़ की कमी रह जाती " लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्योंकि आला अख़लाक़ पर क़ायम थे इसलिए यह जोहर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में था।

"दूसरी बात यह मालूम होती है कि : आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस तालीम पर कामिल यक़ीन था जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया के सामने पेश करते थे और एक मिनट के लिए भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पर शक नहीं करते थे।

और जैसा कि लोग एतराज़ करते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) दुनिया को उल्लो बनाने के लिए और अपनी हुकूमत जमाने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये सब कारख़ाना बनाया था। मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम यही एतराज़ करते हैं "अन्यथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई वह्मी नहीं आती थी।' कई औरेइंटलसट (orientalist) इस तरह ही लिखते रहते हैं और इस वक़्त काफ़िर भी यही कहा करते थे। "यह बात नहीं थी बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने रसूल और ख़ुदा के मामूर होने पर ऐसा बर्फ़ का दिल अता था' इतना पक्का यक़ीन था "कि जिसकी नज़ीर दुनिया में नहीं मिलती। क्योंकि मुम्किन है कि लोगों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनावट से काम लेकर अपनी सच्चाई को साबित करते हों लेकिन यह ख़्याल नहीं किया जा सकता कि रात के वक़्त एक शख़्स खासतौर पर अपनी बेटी और दामाद के पास जाए और उनसे दरयाफ़त करे कि क्या वे इस इबादत को भी बजा लाते हैं जो उसने फ़र्ज़ नहीं की बल्कि उसका अदा करना मोमिनों के अपने हालात पर छोड़ दिया है और जो आधी रात के वक़्त उठकर अदा की जाती उस वक्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जाना और अपनी बेटी और दामाद को तरग़ीब देना कि वह तहज्जुद भी अदा किया करें इस कामिल यक़ीन पर दलालत करता है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस तालीम पर था जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को चाहते थे।

अन्यथा एक मुफ़्तरी इन्सान जो जानता हो कि एक तालीम पर चलना न चलना एक सा है अपनी औलाद को ऐसे पोशीदा वक़्त में इस तालीम पर अमल करने की नसीहत नहीं कर सकता। चलना या ना चलना एक जैसा है। अपनी तालीम पर चलने की अपनी औलाद को नसीहत नहीं कर सकता। "यह उसी वक़्त हो सकता है जब एक आदमी के दिल में यक़ीन हो कि इस तालीम पर चले बग़ैर कमालात हासिल नहीं हो सकते।

तीसरी बात वही है जिसके साबित करने के लिए मैं ने यह वाक़िया वर्णन किया है कि :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर एक बात के समझाने के लिए तह्म्मुल से काम लिया करते थे और बजाय लड़ने के मुहब्बत और प्यार से किसी को इस की ग़लती पर फ़रमाते थे।

इसलिए इस अवसर पर जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सवाल को इस तरह रद्द करना चाहा कि जब हम सो जाएं तो हमारा क्या इख़तेयार है कि हम जागें क्योंकि सोया हुआ इन्सान अपने आप पर क़ाबू नहीं रखता। जब वह सो गया तो अब उसे क्या ख़बर है कि फ़ुलां वक़्त आ गया है अब मैं फ़ुलां काम कर लूं। अल्लाह तआला आँख खोल दे तो नमाज़ अदाकर लेते हैं अन्यथा मजबूरी होती है (क्योंकि उस वक़्त अलार्म की घड़ियाँ थीं) इस बात को सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हैरत होनी थी क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में जो ईमान था वह कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसा ग़ाफ़िल न होने देता था कि तहज्जुद का वक़्त गुज़र जाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर न हो। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरी तरफ़ मुँह कर के सिर्फ यह कह दिया कि इन्सान बात मानता नहीं झगड़ता है। अर्थात तुमको आइन्दा के लिए कोशिश करनी चाहिए थी कि वक़्त ज़ाए न हो न कि इस तरह टालना था। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं मैंने फिर कभी तहज्जुद में नाग़ा नहीं किया।"

(सीरतनु न्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम), अनवारूल उलूम भाग 1 पृष्ठ 588 से 590)

शेष पृष्ठ 08 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"तुम हक़ीक़ी नेकी को जो निजात तक पहुंचाती है हरगिज़ पा नहीं सकते सिवाए इसके कि तुम ख़ुदा तआला की राह में वह माल और वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हारी प्यारी हैं।" (हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

एक दुनिया-दार की नज़र में यह एक ऐसी बात है जिसको समझना मुश्किल है लेकिन जिनके ईमान मज़बूत हैं उन्हें पता है कि यह क़ुर्बानी इसलिए है कि इसके नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल आते हैं।

मैं उन अमीर लोगों से भी कहूँगा कि वे भी इससे सबक़ सीखीं और अपनी क़ुर्बानियों के मयार को बढ़ाएं

याद रखें कि अल्लाह तआला कभी उधार नहीं रखता

क्या इन मुख़ालेफ़ीन की फूँकों से ये चिराग़ बुझ सकता है जो अल्लाह तआला ने जलाया हुआ है। जितना चाहे ज़ोर लगा लें नाकामी और नामुरादी ही मुख़ालेफ़ीन का मुक़द्दर है और जमाअत दुनिया के हर कोने में क़ुर्बानियों की मिसालें क़ायम करते हुए तरक़्क़ी करती चली जा रही है।

तहरीक-ए-जदीद का उद्देश्य ही यह था कि तब्लीग़ करके जमाअत को बढ़ाया जाए और दुनिया के हर मुल्क में जमाअत अहमदिया के ज़रीया इस्लाम का झंडा लहराया जाए। अतः यह जमाअत अहमदिया के द्वारा इस्लाम की आग़ोश में आए हुए लोग हैं जो ईमान-ओ-यक़ीन और क़ुर्बानी में मिसालें क़ायम करने की कोशिश रहे हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरू में इस तहरीक को दस वर्ष तक के लिए बढ़ा दिया था। तीन वर्ष से फिर दस साल कर दिया था। फिर दस वर्ष मुकम्मल होने पर उसके ख़ुशकुन नतायज ज़ाहिर होने पर और मज़ीद क़ुर्बानियां करने वालों की ख़ाहिश पर उसे मज़ीद बढ़ा दिया और फिर यह मुस्तक़िल तहरीक बन गई।

आज फिर उन्नीस वर्ष पूरे होने पर मैं दफ़्तर शुशम के आग़ाज़ का ऐलान करता हूँ। अब नए शामिल होने वाले नौ-मुबाईन भी और नए पैदा होने वाले बच्चे भी या जो भी पहले किसी दफ़्तर में नहीं हैं दफ़्तर शुशम में होंगे।

तहरीक-ए-जदीद के उनानवे (89) वर्ष के दौरान जमाअत के लोगों की तरफ़ से पेश की जाने वाली माली क़ुर्बानियों का वर्णन और नब्बे (९०) वर्ष का ऐलान

मुख़्तलिफ़ देशों से संबंध रखने वाले मुख़लिस अहमदियों और नौ-मुबाईन की माली क़ुर्बानियों के ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात का वर्णन

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के बाबरकत दौर में दूसरे दफ़्तर जबकि मजमूई तौर पर तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर शुशम (6) के आरंभ का ऐलान

मज़लूम फ़लस्तीनियों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 03 नवम्बर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ
(आले इमरान :93)

तुम हरगिज़ नेकी को पा नहीं सकोगे यहां तक कि तुम इन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो तो निसन्देह् अल्लाह उस को ख़ूब जानता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि नेकी के आला मयार उस वक़्त ही हासिल होते हैं जब तुम ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए अल्लाह तआला की राह में वह ख़र्च करो जिससे तुम मुहब्बत करते हो। इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया कि

"तुम हक़ीक़ी नेकी को जो निजात तक पहुंचाती है हरगिज़ पा नहीं सकते सिवाए इसके कि तुम ख़ुदा तआला की राह में वह माल और वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हारी प्यारी हैं।" (फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 38)

फिर एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "माल के साथ मुहब्बत नहीं चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है। لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पा सकते जब तक कि तुम उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में ख़र्च न करो जिनसे तुम प्यार करते हो।

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद भाग 2 पृष्ठ 130)

फ़रमाया : "बेकार और निकम्मी चीज़ों के ख़र्च करने से कोई आदमी नेकी करने का दावा नहीं कर सकता। नेकी का दरवाज़ा तंग है। अतः यह अमर ज़हन नशीन कर लो कि निकम्मी चीज़ों के ख़र्च करने से कोई इस में दाख़िल नहीं हो सकता।" इस नेकी के दरवाज़े में "क्योंकि स्पष्ट है لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (आले इमरान : 93) जब तक प्यारी से प्यारी और प्रिय से प्रिय चीज़ों को ख़र्च नहीं करोगे उस वक़्त तक महबूब और प्रिय होने का दर्जा नहीं मिल सकता। अगर तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते और हक़ीक़ी नेकी को इख़्तेयार करना नहीं चाहते तो क्योंकर कामयाब और बा-मुराद हो सकते हो।' फ़रमाया "क्या सहाबा कराम मुफ़्त में इस दर्जा तक पहुंच गए जो उन को हासिल हुआ। दुनियावी ख़िताबों के हासिल करने के लिए किस क़दर अख़राजात और तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं। तब कहीं जा कर एक मामूली ख़िताब जिससे दिल्ल का इतेमीनान और सकेंत हासिल नहीं हो सकती मिलता है।' ख़िताब ऐसा मिलता है कि ज़रूरी नहीं इस से दिल्ल का सकेंत भी हासिल हो लेकिन इस के लिए इन्सान मेहनत करता है। "फिर ख़्याल करो कि रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़िताब जो दिल को तसल्ली और क़लब के संतोष और मौला करीम की रजामंदी का निशान है क्या यूंही आसानी से मिल गया?' सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को। "बात यह है कि ख़ुदा तआला की रजामंदी जो हक़ीक़ी ख़ुशी का मूजिब है हासिल नहीं हो सकती जब तक आरिज़ी तकलीफ़ें बर्दाश्त न की जाएँ। ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता। मुबारक हैं वे लोग जो रज़ाए इलाही के हुसूल के लिए तकलीफ़ की पर्वा न करें क्योंकि अबदी ख़ुशी और दाइमी आराम की रोशनी इस आरिज़ी तकलीफ़ के बाद मोमिन को मिलती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 75-76 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह माल ख़र्च करने का वह इदराक है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के इरशाद के मुताबिक़ हम में पैदा करना चाहते हैं और यह जमाअत पर अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है, हर अहमदी पर एहसान है जिसने इस बात को समझा और उसने अपना माल दीन के रास्ते में ख़र्च करने के लिए पेश किया कि बावजूद अपनी ज़रूरियात के जमाअत के लोगों की एक बड़ी संख्या अपना माल दीनी ज़रूरत के लिए पेश करती है। हज़ारों मिसालें ऐसी हैं जो अपनी ज़रूरीयात को पसेपुश्त डाल कर दीनी ज़रूरियात के लिए अपनी क़ुर्बानियां पेश करते हैं। आजकल हम देखते हैं कि दुनिया के मआशी हालात उमूमन ख़राब से ख़राब तर होते चले जा रहे हैं, खासतौर पर तरक़्क़ी पज़ीर देशों के। वैसे तो तरक़्क़ी याफताह देशों का भी अब वह हाल नहीं रहा जहां उनको हर चीज़ में आसानियां और कुशाइश थी और अब जो दुनिया में जंग के हालात हैं और यूरोप में भी जो यूक्रेन और रूस की जंग हो रही है उसने यूरोप के हालात भी काफ़ी ख़राब कर दिए हैं। बहरहाल तरक़्क़ी पज़ीर मुल्कों की मईशत पर तो ज़्यादा असर पड़ा है। फिर इन मुल्कों के सियासतदानों की करप्शन ने भी बहुत बुरे हालात कर दिए हैं लेकिन इस के बावजूद अहमदी अपनी माली क़ुर्बानी में आगे ही बढ़ते चले जा रहे हैं।

एक दुनियादार की नज़र में यह एक ऐसी बात है जिसको समझना मुश्किल है लेकिन जिनके ईमान मज़बूत हैं उन्हें पता है कि यह क़ुर्बानी इसलिए है कि इस के नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल नज़र आते हैं।

नवंबर के पहले ख़ुतबा में जैसा कि अहबाब जानते हैं तहरीक-ए-जदीद के नए वर्ष का ऐलान

होता है तो तहरीक-ए-जदीद के हवाले से ही में बाअज़ वाक़ियात पेश करूँगा।

सदर लजना ज़िला लाहौर ने मुझे लिखा कि एक मज्लिस में मुझे तहरीक-ए-जदीद के चंदे की तरफ़ तवज्जा दिलाने के लिए कहा गया। एक दरमयानी कमाई करने वाले औसत दर्जा के लोगों की यह मज्लिस है। कहती हैं कि मुझे शर्म भी थी और हिचकिचाहट भी थी कि मैं क्या उनको तहरीक करूँ क्योंकि ये पहले ही बहुत ज़्यादा क़ुर्बानियां कर रहे हैं लेकिन बहर-हाल मुझे कहा गया था इसलिए तवज्जा दिलानी पड़ी। वह कहती हैं कि मेरी हैरत की इंतिहा न रही जब मैंने देखा कि किस तरह बढ़ बढ़कर औरतों ने अपनी क़ुर्बानियां पेश की हैं। कहने लगीं कि मुझे शर्म अब इस बात पर आई कि कम आमदनी वाले लोग इस तरह क़ुर्बानी कर रहे हैं जिसका हम सोच भी नहीं सकते और बहुत सारे अमीर भी सोच नहीं सकते। नक़द और ज़ेवर की सूरत में कई लाख रुपय दे दिए। इसी तरह वकीलुल माल अव्वल की रिपोर्ट में इन महिलाओं की कई सफ़्हों की एक लंबी फ़हरिस्त है जिन्हों ने अपने ज़ेवर पेश किए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब तहरीक-ए-जदीद का ऐलान फ़रमाया था और इस वक़्त जो मुतालिबात रखे थे उनमें से एक औरतों की क़ुर्बानी के संबंध में यह भी था कि ज़ेवर न बनाएँ या कम बनाएँ और करें।

मैं समझता हूँ कि ज़ेवर की क़ुर्बानी देना जो बना बनाया ज़ेवर है इस से बड़ी क़ुर्बानी है ि कज़ेवर न बनाया जाए। जो सामने चीज़ है इस को देना बहुत मुश्किल काम है।

अतः अहमदी औरतों ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक पर उस वक़्त भी ये क़ुर्बानी दी और आज भी दे रहे हैं। सिर्फ एक मुल्क में नहीं बल्कि उन मग़रिबी देशों में भी ऐसी औरतें हैं जो अपने ज़ेवर देती हैं बल्कि समस्त ज़ेवर चंदे में दे देती हैं। फिर नया बनाती हैं तो फिर चैन नहीं आता फिर वे ज़ेवर चंदे में दे देती हैं क्योंकि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : अबदी और दाइमी ख़ुशी हासिल करना चाहती हैं जो क़ुर्बानी के बग़ैर नहीं मिलती।

फिर ग़रीब लोग हैं जो अपने पेट काट कर चंदा देते हैं और बहुत से ऐसे हैं कि अल्लाह तआला उन्हें फिर फ़ौरी नवाज़ भी देता है और उनको इस चंदे से बढ़कर ऐसे तरीक़ों से अता फ़र्मा देता है कि उन्हें ख़ुद भी हैरत होती है। ऐसे लोगों के कुछ वाक़ियात मैं यहां वर्णन करूँगा लेकिन साथ ही मैं इन अमीर लोगों से भी कहूँगा कि वे भी इस से सबक़ सीखीं और अपनी क़ुर्बानियों के मयार को बढ़ाएं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने एक ख़ुतबा में फ़रमाया था कि ग़रीब लोग तो ऐसे भी हैं जो अपनी एक महीने की आमद का पैंतालीस फ़ीसद तक दे देते हैं अगर उनकी रोज़मर्रा की ख़ुराक को बुनियाद बनाया जाए और इस के मुताबिक़ चंदे का ख़र्च निकाला जाए, लेकिन अमीर लोग सिर्फ डेढ़ फ़ीसद देते हैं बल्कि अब तो ग़रीबों में से ऐसे भी हैं जो सौ फ़ीसद दे देते हैं और अमीर शायद एक फ़ीसद देते हैं। अतः इस लिहाज़ से ग़रीबों का जो सौ फ़ीसद है वह अमीरों की समस्त रक़म से बहुत कम होता है लेकिन क़ुर्बानी का मयार बहुत आला होता है।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग 15 पृष्ठ 443)

अतः इस लिहाज़ से ख़ुशहाल लोगों को भी अपने जायज़े लेने चाहिऐं। ये याद रखें कि अल्लाह तआला कभी उधार नहीं रखता

जैसा कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में दूसरी जगह फ़रमाया कि सात सौ गुना या इस से भी ज़्यादा बढ़ा कर अता फ़र्मा देता है। तो बहरहाल जैसा कि मैंने कहा चंद मिसालें क़ुर्बानी करने वालों की मैं यहां पेश करता हूँ। जहां उनकी क़ुर्बानी और ईमान के जज़्बे का पता चलता है वहां अल्लाह तआला का फ़ज़्ल भी फ़ौरी तौर पर उन पर होता नज़र आता है।

गिनी अफ़्रीक़ा का एक मुलक है। वहां के महमूद साहिब हैं जो मोटर साईकल मिकैनिक हैं। उनको मिशनरी साहिब ने चंदा तहरीक-ए-जदीद की तहरीक की तो उन्होंने अपनी जेब में जितनी भी रक़म थी सब निकाली जो कि दस हज़ार फ्राँक सेफ़ा थी। घर में बैठे थे कि उसी वक़्त उनकी बहू भी आई। उन्होंने घर में खाना पकाने के लिए पैसे मांगे। महमूद साहिब वह सारी रक़म तहरीक-ए-जदीद चंदा में अदा करने की नीयत कर चुके थे और सारी रक़म चंदे में अदा कर दी और बहू को कहा कि आप सब्र करें। इस वक़्त बहू वापस चली गई। महमूद जरगा साहिब कहते हैं कि अभी वह इस परेशानी में थे कि बहू को किस तरह ख़र्च दें कि गर्वनमैंट के एक दफ़्तर से फ़ोन आया कि आप दफ़्तर आ जाएं। जब वहां पहुंचे तो उन्होंने कहा कि आपने पिछले साल हमारी मोटर साईकलों की मुरम्मत की थी जिसकी रक़म हमने आपको अदा नहीं की थी और एक लाख नव्वे हज़ार फ्राँक सेफ़ा का चैक उनको दिया। चैक वसूल करने के बाद महमूद साहिब फ़ौरन अपने घर आए। अपनी बहू और बाक़ी घर वालों को बुला कर कहा देखो! अल्लाह की राह में ख़र्च करने की बरकतें। जिस रक़म की मुझे उम्मीद भी नहीं थी वह मेरे रब ने मुझे दिलवा दी।

फिजी के मुबल्लिग लिखते हैं नांदी के एक दोस्त अशफ़ाक़ साहिब हैं। कहते हैं उन्होंने सफ़र के दौरान मेरा तहरीक-ए-जदीद का जो पिछ्ला ख़ुतबा था वह सुना और जो मैंने वाक़ियात वर्णन किए थे वे सुने। कहते हैं कि इन वाक़ियात का उन पर बड़ा असर हुआ और दौरान-ए-सफ़र गाड़ी चलाते हुए सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद को फ़ोन किया कि मेरा तहरीक-ए-जदीद का चंदा दोगुना कर दें। यह बिज़नस करते हैं। इस के बाद बिज़नस की सालाना माली रिपोर्ट तैयार हुई तो इस साल उनका मुनाफ़ा भी दोगुना था। जिस पर वह वर्णन करते हैं कि मेरा यक़ीन है कि यह दोगुना मुनाफ़ा हमारी मेहनत और कोशिशों से नहीं मिला बल्कि केवल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ये चंदे को दोगुना करने से मिला है।

मास्को के मुबल्लिग लिखते हैं कि रुसलान किक्यू साहब किर्गीस्तान से हैं। चौदह साल से यह मास्को में मुक़ीम हैं। कहते हैं पहले भी ये माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा करते थे। तक़रीबन एक साल क़बल उन्होंने जब माली क़ुर्बानियों का मेरा यह ख़ुतबा सुना तो कहते हैं कि सुनके मुझे बड़ा मज़ा आया और इस के बाद उन्होंने कहा कि मैं भी उन लोगों में शामिल होता हूँ जो क़ुर्बानियां करने वाले हैं और बिलानागा रोज़ाना की आमद का दस फ़ीसद हिस्सा चंदे की आमद में भिजवाना शुरू कर दिया। कुछ सदक़ा में था और बाक़ी चंदे में। कहते हैं कि यही तरीक़ एक साल से उन्होंने क़ायम रखा हुआ है।मुबल्लिग की जब दूसरी जगह बदली हुई तो उस वक़्त उन साहिब का, यह रूसी नज़ाद हैं, किर्गीज़स्तान के हैं, पहला सवाल यह था कि क्या अब भी मैं अपना चंदा जिस तरह मैं अदा करता था इस तरह जारी रख सकूँगा। तो यह इन्क़िलाब है जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लोगों में पैदा किया है। एक फ़िक्र है चंदा देने की।

तनज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं वहां की एक जमाअत में एक शख़्स मुहम्मद सानी साहिब हैं। वहां नौकरी कर रहे थे कि इस कंपनी को जहां नौकरी करते थे माली नुक़्सान हो गया इस वजह से मालिक ने कह दिया कि तमाम कारकुनान की तनख़्वाहों में से कटौती होगी। इस पर उन्हें बहुत दुख हुआ। चंदा तहरीक-ए-जदीद की अदायगी का आख़िरी महीना था। मुअल्लिम ने जब उनसे राबिता किया तो उन्होंने अपनी मुश्किलात का इज़हार तक नहीं किया कि क्या मुश्किल है बल्कि अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा करते हुए अपना वाअदा मुकम्मल कर दिया। वह कहते हैं कि अगले ही दिन उनके मालिक का फ़ोन आया कि उनकी तनख़्वाह में से कटौती नहीं होगी। इसलिए दीगर साथियों की तनख़्वाहों में कटौती हुई लेकिन उनकी तनख़्वाह मुकम्मल वसूल हुई। वह भी कहते हैं कि मैंने उस वक़्त जो चंदा तहरीक-ए-जदीद का अदा कर दिया था यह उस की वजह है।

मलावी एक मुलक है वहां की मागोची (Mangochi) डिस्ट्रिक्ट से संबंध रखने वाली एक बुज़ुर्ग महिला हैं। खेती बाड़ी करती हैं। इसी पर उनका गुज़ारा है। उन्होंने तहरीक-ए--जदीद का वादा लिखवाया लेकिन अदा नहीं कर सकें। साल के इख़तेताम पर जब याद-देहानी करवाई गई कि अगर किसी का वादा ना-मुकम्मल है तो अदायगी कर दें तो कहती हैं उन्होंने काम की बहुत कोशिश की और दुआ भी की कि काम मिल जाए ताकि वह अपनी आमद से वादा मुकम्मल कर सकें। कोशिश के बावजूद उन्हें काम नहीं मिल सका। एक दिन वह मस्जिद में नमाज़-ए-अस्र अदा कर के वापस घर पहुंचीं तो उन्हें ख़बर मिली कि उनके पोते ने उन्हें पैंतालीस हज़ार कवाचे जो वहां की करंसी है भेंट भिजवाई है। इसलिए उनकी ख़ुशी की इंतेहा न रही। उन्होंने फ़ौरन मुअल्लिम के पास जा के अपने वाअदा की अदायगी की और बार-बार वह अल्लाह का शुक्र अदा कर रही थीं कि उन्हें अपना वादा मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ मिली। अब ग़रीब लोग भी एक फ़िक्र के साथ चंदे की अदायगी करते हैं।

तनज़ानिया के अमीर साहिब कहते हैं श्यानगा की एक जमाअत है। वहां मर्यम साहिबा एक महिला हैं। कहती हैं कि मुझे मुअल्लिम का फ़ोन आया। उन्होंने तहरीक-ए-जदीद के बक़ाया की तरफ़ तवज्जा दिलाई। कहती हैं घर के इस्तिमाल के लिए उस वक़्त मेरे पास सिर्फ दस हज़ार शलंग थे वह मैंने चंदे में अदा कर दिए। फिर अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि इसी दिन अल्लाह तआला ने मुझे एक लाख शलंग लौटा दिए और वे भी कहती हैं कि ये सब चंदे की बरकात हैं।

गिनी से एक नौ मुबाईन उसमान साहिब हैं। उनकी ज़िंदगी में बहुत सारी मआशी मुश्किलात थीं। जो भी कारोबार करते कामयाबी नहीं मिलती थी। इस परेशानी में वे रात को सोए तो कहते हैं मुझे आवाज़ आई कि उसमान अपना चंदा बाक़ायदगी से अदा किया करो। सुबह होते ही उसमान साहिब मिशनरी के पास आए और अपनी ख़ाब सुनाई। जिस पर मिशनरी ने उन्हें तहरीक-ए-जदीद और दीगर चंदा जात के बारे में बताया जिस पर उसमान साहिब ने फ़ौरन तहरीक-ए-जदीद का चंदा अदा किया। अपने समस्त चंदा जात की फ़हरिस्त बनाई और बाक़ायदगी से अपने चंदे अदा करने शुरू कर दिए। उसमान साहिब कहते हैं कि जब से उन्होंने अपने तमाम चंदे बाक़ायदगी से अदा करने शुरू किए हैं तब से अल्लाह तआला ने उनके हर कारोबार में बरकत अता फ़रमाई है और तमाम घरेलू परेशानियाँ भी दूर हो गई हैं। अब यह उनका पुख़्ता यक़ीन है कि ये सब तहरीक-ए-जदीद और बाक़ी चंदों की अदायगी की बरकात हैं। यह अल्लाह तआला का सुलूक है और किस तरह नौ-मुबाईन को भी याददेहानी करवाता है। अल्लाह तआला को तो इस की ज़रूरत नहीं है बल्कि वे सिर्फ़ नवाज़ने के लिए यह है।

आस्ट्रेलिया से मुरब्बी कामरान साहिब हैं। कहते हैं एक ख़ादिम ने क़रीबन दस साल से चंदा नहीं दिया था। मैं इस के साथ बैठा और इस को माली क़ुर्बानी की बरकात के मुताल्लिक़ बताया। इस के बाद उसने अपना चंदा देना शुरू कर दिया और साथ ही तहरीक-ए--जदीद और वक़्फ़ जदीद का चंदा अदा कर दिया। कहते हैं कुछ दिन गुज़रे थे कि उस का फ़ोन आया और कहने लगा कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मुझे काम में प्रोमोशन हो गई है जिसकी मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी और कहने लगा कि यह सिर्फ़ और सिर्फ अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी की वजह से है और जो दस साल से सुस्त था कहने लगा कि अब मैं कभी चंदों में सुस्ती नहीं करूँगा।

गेम्बया का गांव है नया मीना (Niamina) वहां भी एक दोस्त उसमान साहिब हैं। सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद उनके गांव गए चंदा की अदायगी की तहरीक करते हुए वर्णन किया कि यह न सिर्फ यह कि माली तहरीक है बल्कि उसके उद्देश्य में से इलम बढ़ाना और तब्लीग़ करना भी है। आप तहरीक-ए-जदीद में शामिल होने वाले हैं तो सिर्फ यही न समझें

कि चंदा दे दिया और काम ख़त्म हो गया। वह तो दे दिया उस के इलावा उनको अपना दीनी इलम भी बढ़ाना चाहिए और फिर तब्लीग़ के मैदान में भी आना चाहिए। पिछले दिनों ख़ुद्दाम अंसार से जब मैंने अह्द लिया था तो इस को भी अगर ये जमाअत वाले सामने रखें तो तब्लीग़ के मैदान में हमें बहुत आगे आना चाहिए। सिर्फ माली क़ुर्बानी दे के न समझ लें कि हमने फ़र्ज़ अदा कर दिया।

तहरीक-ए-जदीद का एक उद्देश्य तब्लीग़ भी था और बहुत बड़ा उद्देश्य यही था जिसकी वजह से शुरू की गई थी।

कहते हैं कि मैं इस से बहुत मुतास्सिर हुआ और मैंने न सिर्फ बैअत कर के जमाअत में शामिल होने का फ़ैसला कर लिया है। कहते हैं उस वक़्त तक उन्होंने बैअत नहीं की थी। जब तहरीक-ए-जदीद के उद्देश्य का पता लगा तो बैअत करके जमाअत में शामिल होने का फ़ैसला किया और एक सौ पच्चास डलासी चंदा तहरीक-ए-जदीद का वादा भी कर दिया। अदायगी भी कर दी। कहते हैं कि चंदे की अदायगी के बाद वे अपने अंदर एक पाक तबदीली महसूस करते हैं और मैं अहमदियों और ग़ैर अहमदियों में इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ कर रहा हूँ। तथा अब बाक़ायदगी से चंदा आम भी अदा कर रहा हूँ।

गेम्बया से ही एक महिला लिखती हैं कि जब से मैंने चंदा अदा किया है मैं अपने और अपने बच्चों के अंदर एक इन्क़िलाब महसूस करती हूँ और देखा है कि अल्लाह तआला हमारी हर ज़रूरत को पूरा कर रहा है। अल्लाह तआला की ख़ातिर उसकी राह में नेकी और क़ुर्बानी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनाती चली जाती है।

गिनी कनाकरी अफ़्रीक़ा का मुलक है। वहां के लोकल मिशनरी कुमारा साहिब ने कहा कि चंदे की वसूली के लिए एक गांव का दौरा कर रहा था कि एक नौ मुबाईन इमाम की पत्नी से चंदे की अदायगी का मुतालिबा किया तो मुहतरमा ने पाँच हज़ार गिनी निकाल कर आसमान की तरफ़ हाथ करते हुए कहा कि अल्लाह! मेरे पास सिर्फ यही कुल रक़म है जो मैं तेरी राह में अदा कर रही हूँ तो उसे क़बूल फ़र्मा और वह रक़म चंदे में अदा कर दी। नौ मुबाई है। अफ़्रीक़ा के दूर दराज़ इलाक़े में रहने वाली है। लोकल मिशनरी साहिब वर्णन करते हैं कि मैं जब गांव का दौरा करके वापस पहुंचा तो वह मुहतरमा जिन्हों ने पाँच हज़ार फ्राँक गिनी चंदा अदा किया था बड़ी ख़ुशी से बताने लगी कि आज के सौदे में जो मैं ने अल्लाह से किया था मुझे बहुत मुनाफ़ा हुआ है। कहती हैं आपके जाने के बाद अल्लाह तआला ने मुझे एक रिश्ता दार के ज़रीया अस्सी हज़ार फ्राँक गिनी भिजवा दिए जो मेरी क़ुर्बानी से कहीं अधिक है।

गिनी कनाकरी से ही लोकल मिशनरी जालू साहिब कहते हैं कि तहरीक-ए-जदीद दस दिनों का मनाने के दौरान एक गांव कौनताया (Kontayah) में मुअल्लिम साहिब चंदे की वसूली के लिए पहुंचे। एक नौ मुबाईन शैख़ो साहिब ने तीस हज़ार फ्राँक गिनी चंदा तहरीक--ए-जदीद की मद में अदा करने का वादा किया हुआ था। जब उन्हें अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो उन्होंने कहा कि मेरे पास आज घर के ख़र्चा के लिए कुल रक़म तीस हज़ार ही है लेकिन मैं उसे अल्लाह की राह में पेश करता हूँ अल्लाह इसे क़बूल फ़रमाए। अगले रोज़ मौसूफ़ का बड़े पुरजोश अंदाज़ में फ़ोन आया कि अल्लाह ने मेरी क़ुर्बानी क़बूल कर ली है। अभी चंदा अदा किए चंद घंटे गुज़रे थे कि मेरे बेटे ने मुझे तीन लाख फ्राँक गिनी घर के अख़राजात के लिए भिजवा दिए। वे वर्णन करते हैं कि अल्लाह तआला ने मेरे ईमान को इस वाक़िया के बाद बहुत तक़वियत अता की है। जमात जो चंदा हमसे वसूल करती है वह अल्लाह की राह में ही ख़र्च होता है और मैं अब इसी तरह क़ुर्बानी करता रहूँगा। यह भी उनकी तसल्ली हो गई कि अल्लाह तआला ने जो नवाज़ा है तो इसलिए कि इस रक़म का मुसर्रिफ़ भी सही है और रक़म ज़ाए हुई।

काज़कसतान से एक दोस्त बाएगा मेतूफ़ साहिब हैं। चंदों में बाक़ायदगी से हिस्सा लेते हैं। कहते हैं कि जून के महीने में मुझे नौकरी से फ़ारिग़ कर दिया गया और मेरी जितनी भी तनख़्वाह बनती थी वे मालिकान ने अदा कर दी। अब कहते हैं मैं पेंशन पर हूँ। नौकरी से निकलने के कुछ माह बाद मुझे कुछ बीमारी की वजह से महंगी दवाईयां और दीगर इश्याय ख़रीदनी पड़ीं लेकिन माली तौफ़ीक़ न होने की वजह से बहुत परेशान रहता था। अगले रोज़ गली में चलते हुए मुझे अपना क्रेडिट कार्ड चैक करने का ख़्याल आया। मैं जानता था कि मेरा क्रेडिट कार्ड ख़ाली होगा। उसके अंदर कुछ भी नहीं है। इस में पैसे नहीं हो सकते फिर भी चैक करने का इरादा किया। जब मैंने चैक किया तो मेरी हैरत की इंतिहा न रही क्योंकि कार्ड में एक लाख नव्वे हज़ार मुक़ामी करंसी मौजूद थी। मैं हैरान था अल्लाह का बेहद शुक्र करता रहा। रक़म कोई भी वजह बताए बग़ैर इस कंपनी ने जिससे में त्यागपत्र देने वाला हुआ था मेरे एकाऊंट में ट्रांसफ़र कर दी थी। कहते हैं कि उन्होंने कंपनी में फ़ोन किया और वजह मालूम की तो पता चला कि कंपनी के देश ने ये रक़म उनकी ईमानदारी और सच्चाई की वजह से बतौर तोहफ़ा भेजी है। कहते हैं कि ये सब तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़ जदीद के चंदों में बाक़ायदगी का है।

मलेशिया से एक दोस्त भकरा (Bhakra) साहिब हैं। कहते हैं मेरा ज़ाती तजुर्बा है 17-2016 के दरमयान मैंने तहरीक-ए-जदीद में एक हज़ार रंगट का वादा किया। इस दौरान में अपने माली हालात की वजह से अदायगी करने से क़ासिर था जो उस वक़्त वाक़ई मुश्किल था और मेरा कारोबार प्रभावित हो रहा था। मैं परेशानी की हालत में था और उम्मीद रखता था कि वादा की मुकम्मल अदायगी हो जाएगी लेकिन मैं पैसे भी जमा नहीं कर सकता था। मैं सिर्फ अल्लाह तआला से दुआ करता था कि अगर मेरी नीयत सच्ची है और जमात वाक़ई हक़ पर है तो यक़ीनन अल्लाह तआला आसानियां पैदा करेगा। वादाजात की अदायगी करने के आख़िरी दिन से एक दिन पहले इत्तिफ़ाक़न कारोबार से आमदनी आई और रक़म बिल्कुल एक हज़ार रंगट थी। मैं बग़ैर सोचे समझे सैक्रेटरी माल के घर गया और उन्हें एक हज़ार रंगट अदा किए। इस वाक़िया के बाद से मुझे इस जमात पर मुकम्मल यक़ीन है कि अगर हमारे मक़ासिद जमाअत और इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए मुख़लिस हों तो अल्लाह तआला ज़रूर ग़ैरमामूली तौर पर आसानियां पैदा कर देता है। अतः यह एक तरह की सोच है जो दुनिया के हर मुल्क में रहने वाले अहमदी की है। हालाँकि बीच में हज़ारों मील का फ़ासिला है लेकिन अल्लाह तआला इस तरह ईमान मज़बूत करता है और जमाअत की सच्चाई भी उन पर ज़ाहिर कर देता है। ईमान को भी मज़बूत करता है।

जर्मनी के एक दोस्त कहते हैं मेरी फ़र्म के माली हालात ख़राब होने पर काम का अरसा कम हो गया जिसकी वजह से मेरी आमदनी कम हो गई। जिस रोज़ तहरीक-ए-जदीद का सैमीनार था उस वक़्त ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात सुनते हुए मैंने अपने दिल में अल्लाह तआला से वादा किया कि मैं पाँच सौ यूरो मज़ीद अदा करूँगा। इस सिलसिला में कहते हैं उन्होंने मुझे दुआ के लिए ख़त भी लिखा ख़ुद भी दुआएं कीं। अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया और तहरीक-ए-जदीद के पहले वादे की अदायगी के बाद मज़ीद छः सौ यूरो उनको अदा करने की तौफ़ीक़ हुई। कुछ रोज़ के बाद किसी और फ़र्म का फ़ोन आया कि अगर आप पहली फ़र्म को छोड़कर हमारे पास काम करें तो आपकी तनख़्वाह पहली फ़र्म से एक हज़ार यूरो ज़्यादा होगी। मैंने सोच बिचार के बाद फ़ैसला किया कि इस नई फ़र्म में काम करूँगा। इस फ़र्म के मालिक ने कहा चूँकि आपने अपनी पुरानी फ़र्म छोड़ दी है इसलिए आपको तीन माह तक हर महीने बाक़ायदा दो हज़ार यूरो भी तीन क़िस्तों में बोनस दिया जाएगा और काम के मुताल्लिक़ बताया कि जुमा हफ़्ता और इतवार को छुट्टी होगी। इस तरह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से तहरीक-ए-जदीद में इज़ाफ़ी क़ुर्बानी के नतीजा में न सिर्फ मेरी तनख़्वाह में इज़ाफ़ा हो गया बल्कि नमाज़-ए-जुमा की अदायगी का भी मु-स्तक़िल इंतिज़ाम हो गया।

आवरी कोस्ट के मुबल्लिग लिखते हैं कि तहरीक-ए-जदीद के चंदे की वसूली के सिलसिला में (Yaollesso) नामी गांव में चंदे की तहरीक की। एक मुअम्मर बुज़ुर्ग जो निहायत ग़रीब थे और उनकी माली हैसियत के मुताबिक़ हमारा ख़्याल था कि अगर दोसौ या तीन सौ फ्राँक भी दे दें तो बड़ी बात है। वे उठे और घर गए। न सिर्फ ख़ुद चंदे की रक़म लेकर आए बल्कि साथ अपने बेटे को भी लेकर आए कि तुम भी चंदा अदा करो। इसलिए उन्होंने दो हज़ार फ्राँक पेश किया जो उनकी हैसियत के मुताबिक़ एक ख़तीर रक़म थी। उनके बेटे ने भी पाँच सौ फ्राँक अदा किया। यह है माल की मुहब्बत पर अल्लाह तआला के दीन की ख़ातिर क़ुर्बानी का जज़बा।

सेनेगाल अफ़्रीक़ा का एक और मुल्क है।

मुअल्लिम साहिब कहते हैं मुहम्मद अंजाए साहिब एक ग़रीब लेकिन मुख़लिस अहमदी हैं। उनकी पत्नी बीमार थीं। डाक्टर ने जो अदवियात लिख कर दें इनकी क़ीमत पंद्रह हज़ार फ्राँक सीफ़ा थी जो उन के पास मौजूद नहीं थी। वे अपने किसी दोस्त के पास क़र्ज़ के हुसूल के लिए गए। उस से क़र्ज़ लिया। इसी दौरान नमाज़ का वक़्त हो गया। नमाज़ की अदायगी के लिए मिशन हाऊस आए। अपनी बीवी की सेहत के मुताल्लिक़ मुअल्लिम साहिब से वर्णन किया और अभी पूरी तफ़सील नहीं बताई थी सिर्फ वर्णन ही किया था कि मुअल्लिम साहिब ने अपनी बात पहले शुरू कर दी और तहरीक-ए-जदीद के दस दिनों के हवाले से वर्णन करना शुरू किया कि ख़ुदा की राह में क़ुर्बानी करें। अल्लाह तआला आसानियां पैदा करता है। बहरहाल उन्होंने अपनी मजबूरी का वर्णन किया और कहा कि दो-चार दिन बाद में अदायगी कर दूँगा। अभी तो मुझे मजबूरी है। उस वक़्त पत्नी की दवा ख़रीदने के लिए क़र्ज़ लिया है वह ले लूँ। बहरहाल वे मिशन हाऊस से चले गए। चंद मिनट गुज़रे थे कि वापस आए और कहा कि मिशन हाऊस से निकलते ही मुझे ख़्याल आया कि मुझे मुअ-ल्लिम ने तहरीक की है और मैं ने इस तहरीक पर कुछ भी अदायगी नहीं की। इस पर मेरा दिल बहुत बोझल हो गया। इसलिए आप ये पाँच हज़ार फ्राँक सीफ़ा तहरीक-ए-जदीद में काट लें। मैं सिर्फ ज़रूरी दवा ख़रीद लूँगा। यह कह कर उन्होंने रसीद ली और चले गए। मिशन हाऊस से निकल कर अभी फार्मेसी तक नहीं पहुंचे थे कि एक काल आई। एक साहिब ने कहा कि मैंने एक बैड बनवाना है। मैं आपको पच्चास हज़ार फ्राँक सेफ़ा में टेलीफ़ोन के ज़रीया क्रेडिट बैंक को आर्डर कर के ट्रांसफ़र कर रहा हूँ। जब आपकी पत्नी ठीक हो जाएं तो मेरा बैड बना दें और बक़ीया रक़म बाद में अदा कर दूँगा। यह कहते हैं फार्मेसी पर जाने की बजाय वे साहिब फिर वापिस मिशन हाऊस आए और मुअल्लिम को ये सारा वाक़िया बताया और कहा कि चंदे की बरकत से ख़ुदा तआला ने ख़ास फ़ज़्ल फ़रमाया है और मेरी ज़रूरत से ज़ायद रक़म मुझे मिल गई है।

सेनेगाल से ही मुअल्लिम साहिब वर्णन करते हैं। एक मुख़लिस दोस्त वागन साहिब ने तहरीक-ए-जदीद के चंदा का दस हज़ार फ्राँक सीफ़ा का वादा किया। उनको बताया गया कि तहरीक-ए-जदीद का अंत होने होने वाला है और आपका चंदा अभी बक़ाया है। उन्होंने कहा अभी तो मेरे पास पैसे नहीं हैं लेकिन बहरहाल फ़िक्र न करें अरसा ख़त्म होने से पहले मैं अदा कर दूँगा चाहे मुझे अपने कपड़े बेच कर ही रक़म अदा करनी पड़े। यह जज़बा है उनका। मुअल्लिम साहिब बताते हैं कि चंद दिन बाद वे ख़ुद ही मेरे घर आए और कहा कि मेरा तहरीक-ए-जदीद का चंदा वसूल कर लें और बताया कि इस की बहुत फ़िक्र थी और आज ही मेरी बेटी ने मुझे नाक़ाबिल-ए-यक़ीन तौर पर पैसे भेजे हैं तो सबसे पहले मैं चंदा देने आ गया हूँ। ऐसे ऐसे मुख़लिस जमाअत में हैं कि पर्वा नहीं करते किसी चीज़

की।

नाईजर के अमीर साहिब कहते हैं। एक मुअल्लिम हैं उनकी पत्नी घरेलू महिला हैं। अपनी कोई आमदनी नहीं। मुअल्लिम साहिब ही उनका तहरीक-ए-जदीद का वादा अदा किया करते थे। जब उनकी पत्नी को इलम हुआ तो उन्होंने कहा कि इस साल मैं अपना चंदा ख़ुद अदा करूँगी और मेरा वादा आठ हज़ार सीफ़ा लिख लें। उनके मुअल्लिम शौहर ने कहा कि कैसे अदा करोगी। उन्होंने कहा मुझे यक़ीन है कि मेरी क़ुर्बानी अल्लाह तआला क़बूल करेगा और फिर इस तरह ही हुआ कि कुछ दिन गुज़रे थे कि उनके पड़ोस से एक औरत उनके पास आई और कहा कि अगर आपको सिलाई आती हो तो मेरे कपड़े सिलाई कर दें और साथ ही तीन हज़ार सीफ़ा ऐडवान्स भी दे दिया जो उन्होंने फ़ौरन तहरीक-ए--जदीद की मद में अदा कर दिया। इसके बाद से उनके पास इतना काम आया कि उन्होंने बाआसानी अपना चंदा मुकम्मल कर लिया। जब तहरीक शुरू हुई थी तो औरतों ने उस वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा था कि आज आपने कहा था कि पाँच रुपय या दस रुपय दो लेकिन ये इतनी रक़म हम यकमुशत नहीं दे सकते। एक एक, दो दो रुपया हम अदा कर सकती हैं। हमें इजाज़त दी जाए महीने के दे दें। यह जज़बा जो उस वक़्त दिखाया गया था आज भी क़ायम है बल्कि उन लोगों में है जो हज़ारों मील दूर बैठे हैं। ख़लीफ़-ए-वक़्त की बराह-ए-रस्त आवाज़ तो सुन लेते हैं लेकिन उनको समझ नहीं आती। बाअज़ ज़बान भी नहीं जानते लेकिन इख़लास में बढ़े हैं।

सेनेगाल से मुअल्लिम साहिब लिखते हैं। तांबा कोन्डा एक जमाअत है जहां पर सईदी साहिब के पास गाय और भेड़ों का अपना रेवड़ है। उन्होंने काल करके उन्हें पूछा कि तह-रीक-ए-जदीद क्या है। उन्होंने लोगों से सुन लिया था कि अहमदियों को तहरीक-ए-जदीद का चंदा देना चाहिए। मुअल्लिम साहिब ने उनको तहरीक-ए-जदीद के मुताल्लिक़ तफ़सील से बताया और यह भी बताया कि इन दिनों अशरा तहरीक-ए-जदीद भी चल रहा है। उन्हों ने बताया कि उनके वालिद बड़े मालदार आदमी थे परंतु वे ज़कात और अल्लाह के मार्ग मे खर्च करने में कमज़ोर थे परंतु मौलवियों की ख़ातिर मुदारात करते रहते थे। उनके वालिद की वफ़ात के बाद काफ़ी जानवर उनके हिस्सा में आए हैं परंतु उनको भी अल्लाह के मार्ग में खर्च करने की तरफ़ तवज्जा पैदा नहीं हुई। जब मुअल्लिम साहिब ने उनको ज़कात और दीगर चंदा जात की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो उन्होंने एक गाय और दो भेड़ें चंदा में दें और कहा कि एक भेड़ ख़ास तहरीक-ए-जदीद के लिए है। इस के सात दिन बाद उनको ख़ाब आई कि जानवरों में एक ख़ास किस्म की बीमारी फैल रही है जिसकी वजह से जिस्म से पानी बहता है और जानवर मरते जा रहे हैं। चूँकि वे ख़ुद भी एक बड़े रेवड़ के मालिक हैं तो उन्होंने ख़ाब में ही परेशानी में यह ख़्याल किया कि उनके जानवर भी तो हैं। तो उन्होंने ख़ाब में ही दुआ की कि हे ख़ुदा मेरे जानवरों की हिफ़ाज़त फ़र्मा। इस पर उनको ख़ाब में बड़े ज़ोर से आवाज़ आई कि तहरीक-ए-जदीद की वजह से तुम्हारे जानवर महफ़ूज़ रहेंगे। इस दौरान उन्होंने एक काग़ज़ देखा जिस पर पहली लाईन में बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम लिखा हुआ था और उनका नाम भी दर्ज था। उनकी आँख खुल गई। मुअल्लिम साहिब को काल की। ख़ाब बताई। मुअल्लिम ने बताया कि जो रसीद आपको दी हुई है उस की सबसे ऊपर वाली लाईन पढ़ें। वहां बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम ही लिखा हुआ है और इस के नीचे आपका नाम भी लिखा हुआ है। और फिर नीचे तहरीक-ए-जदीद का चंदा लिखा हुआ है। इस के इलावा वे कुछ पढ़ नहीं सकते थे तो बहरहाल ये कहते हैं जब मैंने रसीद को भी देखा और ख़ाब भी तो ये वाक़िया मेरे ईमान में ज़्यादती का मूजिब हुआ। अजीब अजीब तरीक़े से अल्लाह तआला भी राहनुमाई फ़रमाता है।

श्यानगा, तनज़ानिया के मुअल्लिम लिखते हैं। जमाअत के एक नौ मुबाईन अहमदी बुज़ुर्ग रमज़ान साहिब ने चंदा तहरीक-ए-जदीद के लिए अच्छा मयारी वादा लिखवाया। उनका गुज़र बसर खेती बाड़ी से होता था और बारिश न होने की वजह से बहुत से किसानों की फ़सल अच्छी नहीं हो सकी। रमज़ान साहिब ने बताया कि वह हर वक़त इसी परेशानी में थे कि वह अपना वाअदा तहरीक-ए-जदीद कैसे पूरा करेंगे। वह कहते हैं कि मैं इस ख़्याल में था कि एक दिन मेरे एक अज़ीज़ का फ़ोन आया जिसने अरसा-ए-दराज़ से कोई राबिता नहीं किया था। उसने फ़ोन कर के कहा कि मैं आपको कुछ पैसे भेज रहा हूँ, रक़म भिजवा रहा हूँ जिससे आप अपने घर के लिए कुछ खाने का सामान ले लें। इन बुज़ुर्ग को जब रक़म मिली तो वह सीधा सैक्रेटरी माल के पास गए और अपना वादा पूरा किया और ज़ायद भी अदा किया। उनका कहना है कि ये सब मेरे अल्लाह ने मेरी मदद फ़रमाई है ताकि मैं चंदे का वादा मुकम्मल कर सकूँ।

तो ये थे उन लोगों के क़ुर्बानी के मयार और उनके भी जो नए शामिल होने वाले हैं। कहाँ तो जमात मुख़ालिफ़ जमाअत को ख़त्म करने के लिए ज़ोर लगा रहे थे और फिर देखें कैसे अल्लाह तआला ने नौ-मुबाईन के दिल में जमाअत की ख़ातिर क़ुर्बानी की तहरीक पैदा की और फिर नवाज़ भी रहा है।

क्या इन मुख़ालेफ़ीन की फूँकों से ये चिराग़ बुझ सकता है जो अल्लाह तआला ने जलाया हुआ है। जितना चाहे ज़ोर लगा लें नाकामी और नामुरादी ही मुख़ालेफ़ीन का मु-क़द्दर है और जमाअत दुनिया के हर कोने में क़ुर्बानियों की मिसालें क़ायम करते हुए तरक़्क़ी करती चली जा रही है।

तहरीक-ए-जदीद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरू ही इस वजह से की थी कि जमाअत के ख़िलाफ़ हर तरफ़ से शोरिश थी यहाँ तक कि हुकूमत के आफ़सरान भी मुख़ालेफ़ीन की पुश्तपनाही कर रहे थे।

तहरीक-ए-जदीद का उद्देश्य ही यह था कि तब्लीग़ करके जमाअत को बढ़ाया जाए और दुनिया के हर मुल्क में जमाअत अहमदिया के ज़रीया इस्लाम का झंडा लहराया जाए। अतः यह जमाअत अहमदिया के ज़रीया इस्लाम की आग़ोश में आए हुए लोग हैं जो ईमान-ओ-यक़ीन और क़ुर्बानी में मिसालें क़ायम करने की कोशिश कर हैं।

वाक़ियात तो बेशुमार हैं लेकिन इन सबको उस वक़्त यहां वर्णन नहीं किया जा सकता। तहरीक-ए-जदीद के हवाले से कुछ मज़ीद भी बता दूं नीज़ इस का इतिहासिक पृष्ठभूमि भी। जैसा कि मैंने वर्णन किया है जमाअत के ख़िलाफ़ हर तरफ़ से फ़ित्ना और फ़साद उठ रहा था। खासतौर पर अहरार ने तो फ़साद पैदा करने के लिए अपना समस्त ज़ोर लगा लिया था और यह नारा था कि अहमदियत को सफ़ा हस्ती से मिटा देंगे। कादियान का नाम-ओ-निशान मिटा देंगे और कादियान की ईंट से ईंट बजा देने की बातें होती थीं। यहां तक कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार और मुक़द्दस मुक़ामात की बेहुरमती के प्रोग्राम थे और हुकूमत की तरफ़ से भी मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ ज़्यादा रुजहान नज़र आता था बावजूद उसके कि इस वक़्त अंग्रेज़ हुकूमत थी। बजाय फ़ित्ना ख़त्म करने के उनकी हिमायत की जाती थी। तो उन हालात में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जमाअत को एक प्रोग्राम देकर तहरीक की जिसमें माली क़ुर्बानी की तरफ़ भी तवज्जा दिलाई। यह 1934 ई. की बात है। नवंबर में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले कुछ ख़ुतबात दिए जिनमें कुछ तमहीद और पस-ए-मंज़र वर्णन किया कि क्यों मैं तहरीक करना चाहता हूँ। पहले अभी यह वर्णन ही किया था और पूरी तफ़सील वर्णन नहीं फ़रमाई थी लेकिन मख़लेसीन ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हर किस्म की क़ुर्बानी पेश करने के लिए लिखना शुरू कर दिया जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुशनुदी का इज़हार भी फ़रमाया और फ़रमाया मैं यह तफ़सील इसलिए वर्णन कर रहा हूँ कि जमाअत तैयार हो क़ुर्बानी के लिए क्योंकि बाअज़ दफ़ा क़ुर्बानियां लंबी कर देनी पड़ती हैं और औरतें और बच्चे भी इस के लिए तैयार हूँ। यह सिर्फ़ मर्दों का काम नहीं है बल्कि औरतों को भी अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना होगा। गो उस वक़्त यह हर अहमदी के लिए लाज़िम नहीं थी लेकिन इख़लास-ओ-वफ़ा का ग़ैरमामूली जज़बा जमाअत ने दिखाया।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 15 पृष्ठ 411)

बहरहाल 1934 ई. में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाक़ायदा एक फ़ंड का ऐलान फ़रमाया और बताया कि हमने दुश्मन की रेशा दिवानियों का जवाब उनकी तरह फ़साद कर के नहीं बल्कि तब्लीग़ कर के देना है। क्योंकि दुश्मन को यह अवसर ही इसलिए मिला है कि हमने पूरी तरह तब्लीग़ का हक़ अदा नहीं किया। इस के मुताल्लिक़ जिस संजीदगी से सोच कर मंसूबा बंदी होनी चाहिए थी वह नहीं की। अहमदियत के पैग़ाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए जो कोशिश होनी चाहिए थी वह नहीं की। इस का हक़ जिस तरह अदा होना चाहिए था उस का हक़ अदा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस वक़्त जमाअत को एक प्रोग्राम देकर जिस में अपनी इस्लाह और क़ुर्बानी के मयार को बुलंद करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई माली क़ुर्बानी की भी तहरीक की जो कि सत्ताईस हज़ार रुपय थी जो कि तीन साल में जमा करना था लेकिन अल्लाह तआला ने इस इख़लास-ओ-वफ़ा से भरी हुई जमाअत को अपने फ़ज़ल से ख़लीफ़ा वक़्त की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए एक लाख रुपय एक साल में ही देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और इस वक़्त जमाअत के माली हालात को देखते हुए ये बहुत बड़ी क़ुर्बानी थी। चंद चंद आनों की क़ुर्बानियां होती थीं। उस वक़्त अपना और अपने बच्चों का पेट काट कर क़ुर्बानी करने का जो नमूना क़ायम किया अल्लाह तआला ने उस को ऐसा क़बूल फ़रमाया कि जहां दुनिया में तब्लीग़ के ग़ैरमामूली रास्ते खुले वहां यह क़ुर्बानियां उन तक ही महिदूद नहीं रहीं बल्कि आज भी ऐसे नमूने हमें नज़र आते हैं जैसा कि इन वाक़ियात में हैं जो मैं ने वर्णन किए हैं। बहरहाल उन लोगों ने जहां माली क़ुर्बानियां कीं वहां दीन के लिए अपनी ज़िंदगीयां भी वक़्फ़ कीं। दूर दराज़ मुल्कों में तब्लीग़ के लिए गए और बाअज़ को क़ैद-ओ-बंद की सऊबतें भी बर्दाश्त करनी पड़ीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरू में इस तहरीक को दस साल तक के लिए बढ़ा दिया था। तीन साल से फिर दस साल कर दिया था। फिर दस साल मुकम्मल होने पर उस के ख़ुशकुन नतायज ज़ाहिर होने पर और मज़ीद क़ुर्बानियां करने वालों की ख़ाहिश पर उसे मज़ीद बढ़ा दिया और फिर यह मुस्तक़िल तहरीक बन गई।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग 25 पृष्ठ 699-700)(उद्धृत ख़ु-तबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग 18 पृष्ठ 591)

आज हम अल्लाह तआला की ताईद-ओ-नुसरत के जो नज़्ज़ारे देख रहे हैं वे इन इब-तेदाई लोगों की क़ुर्बानियों का ही नतीजा है जिसे अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाया बल्कि अब भी नए शामिल होने वालों को बाअज़ दफ़ा ख़ाबों के ज़रीया इस तहरीक में और माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है जैसा कि मैंने वाक़ियात में वर्णन किया।

इन इबतेदाई क़ुर्बानी करने वालों की नसलों को आज भी अपने आबाओ अज्दाद की क़ुर्बानियों को याद रखते हुए जहां ख़ुद और अपनी नसलों को इन क़ुर्बानियों के तसलसुल को जारी रखने की कोशिश करनी चाहिए वहां अपने पर जो फ़ज़ल हुए हैं उस पर ख़ुद भी ज़्यादा से ज़्यादा क़ुर्बानी करनी चाहिए।

बहरहाल इस तहरीक के मुताबिक़ जो इबतेदाई लोग थे उनकी संख्या पाँच हज़ार थी और यह दफ़्तर अव्वल तहरीक-ए-जदीद के मुजाहिद थे और फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह की तरफ़ से ख़ास तहरीक की गई कि उनके बच्चों और नसलों को उनकी क़ुर्बानियों को ज़िंदा रखने के लिए ताक़यामत उनकी तरफ़ से चंदा देते रहना

चाहिए।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-ताहेर भाग 4 पृष्ठ 865)

और फिर मैंने भी जब दफ़्तर पंजुम का आग़ाज़ किया तो इस तरफ़ ख़ास तवज्जा दिलाई और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन सब के खाते ज़िंदा हैं। दफ़्तर अव्वल के मुजाहेदीन को जब दस साल पूरे हो गए तो फिर हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूसरे दफ़्तर का ऐलान फ़रमाया और इस में बाद में आने वाले शामिल हुए और इस का अरसा उन्होंने उन्नीस वर्ष निर्धारित फ़रमाया और फ़रमाया कि आइन्दा ये दफ़्तर उन्नीस साल के बाद क़ायम होते चले जाऐंगे। हर उन्नीस साल के बाद एक दफ़्तर उन्नीस साल का होगा। फिर अगला शुरू हो जाएगा।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए- महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग 25 पृष्ठ 731-732)

तो उस के मुताबिक़ फिर दफ़्तर सोइम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने जारी फ़रमाया लेकिन क्योंकि उन्नीस साल बाद यह 1964 ई. में जारी होना चाहिए था लेकिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी की वजह से उस वक़्त उस का ऐलान आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नहीं फ़र्मा सके। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने फ़रमाया कि इस दफ़्तर का ऐलान तो मैं कर रहा हूँ लेकिन यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मंसूब होगा और अल्लाह तआला मुझे भी इस का सवाब दे देगा। इस का ऐलान 1966 ई. में हुआ लेकिन आप ने फ़रमाया कि यह 1965 ई. नवंबर से जारी होगा

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-नासिर भाग 1 पृष्ठ 228)

फिर 1985 ई. में दफ़्तर चहारुम का इजरा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-ताहिर भाग 4 पृष्ठ 870)

फिर उसके उन्नीस साल के अरसा को क़ायम रखते हुए यह जो दफ़्तर चहारुम था उन्नीस साल क़ायम रहा। 2004 ई. में जब उन्नीस साल का यह अरसा ख़त्म हुआ तो फिर मैंने दफ़्तर पंजुम का इजरा किया और आज फिर उन्नीस साल पूरे होने पर मैं दफ़्तर शुशम के आग़ाज़ का ऐलान करता हूँ। अब नए शामिल होने वाले नौ-मुबाईन भी और नए पैदा होने वाले बच्चे भी या जो भी पहले किसी दफ़्तर में नहीं हैं दफ़्तर शुशम में शामिल होंगे।

अतः जमाअती इंतेज़ामिया अब अपनी अपनी जमाअतों में इस के मुताबिक़ अमल करें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब नए दफ़्तर का ऐलान फ़रमाया था तो उस वक़्त इरशाद फ़रमाया था कि इसके बाद अर्थात दफ़्तर दोम के बाद तहरीक-ए-जदीद के दौर-ए-सोम और चहारुम और दौर-ए-पंजुम आएँगे और हम दीन के लिए क़ुर्बानियां करते चले जाऐंगे। जिस दिन हमने दीन के लिए जद्द-ओ-जहद छोड़ दी और जिस दिन हम में वे लोग पैदा हो गए जिन्हों ने कहा कि दौरे अव्वल भी गुज़र गया, दौर सोइम भी गुज़र गया, दौर चहारुम भी गुज़र गया, दौर पंजुम भी गुज़र गया, दौर शुशम भी गुज़र गया, दौर हफ़्तुम भी गुज़र गया अब हम कब तक इस किस्म की क़ुर्बानियां करते चले जाऐंगे। आख़िर कहीं न कहीं तो ख़त्म करना चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वे उन लोगों का इक़रार होगा कि अब हमारी रूहानियत सर्द हो चुकी है और हमारे ईमान कमज़ोर हो गए हैं। हम तो उम्मीद रखते हैं कि तहरीक-ए-जदीद के ये दौर ग़ैर महिदूद दूर होंगे और जिस तरह आसमान के सितारे गिने नहीं जाते इसी तरह तहरीक-ए-जदीद के दौर भी गिने नहीं जाऐंगे। जिस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा कि तेरी नसल गिनी नहीं जाएगी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नसल ने दीन का बहुत काम किया यही हाल तहरीक-ए-जदीद का है। तहरीक-ए-जदीद का दौर चूँकि आदमियों का नहीं बल्कि दीन के लिए क़ुर्बानी के सामानों का मजमूआ है इसलिए उस के दौर भी अगर न गिने जाएं तो यह एक महान् बुनियाद इस्लाम और अहमदियत की मज़बूती की होगी।

(उद्धारित ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हो भाग 27 पृष्ठ 65)

अतः इस सोच के साथ हर अहमदी को अपने क़ुर्बानियों के मयार को सामने रखना चाहिए। अल्लाह तआला इन क़ुर्बानी करने वालों को किस तरह नवाज़ता है इस के चंद वाक़ियात जैसा कि मैंने कहा मैंने वर्णन किए।

यह अल्लाह तआला की कर्मी गवाही है कि ये इलाही तहरीक है।

इसी तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तहरीक-ए-जदीद के ज़िमन में एक जगह उसको वसीयत के निज़ाम के साथ जोड़ते हुए यह भी फ़रमाया था कि तहरीक--ए-जदीद का जो निज़ाम है, जो तहरीक है यह मैं अपने अलफ़ाज़ में वर्णन कर रहा हूँ कि ये निज़ाम वसीयत के सहायक के तौर पर है। अर्थात उस की वजह से निज़ाम वसीयत भी मज़बूत होगा। यह माली क़ुर्बानियों की आदत डालने की बुनियाद होगी। ये पेश-रौ है अर्थात आगे चलने वाली चीज़ है। इत्तिला देने वाला जो एक दस्ता होता है इस तरह का है। लोगों को इत्तिला देता चला जाएगा कि एक अज़ीम निज़ाम उस के पीछे आ रहा है यह निज़ाम-ए-वसीयत कहलाएगा।

(उद्धारित निज़ाम-ए-नौ, अनवारूल उलूम भाग 16 पृष्ठ 600)

अतः जैसा कि मैंने निज़ाम वसीयत में शमूलियत के लिए तहरीक करते हुए 2005 ई. में इस की तरफ़ कहा था कि निज़ाम-ए-वसीयत के साथ निज़ाम ख़िलाफ़त का भी गहरा संबंध है। अब निज़ाम-ए-वसीयत के साथ ही क़ुर्बानियों के मयार भी बढ़ने हैं तो पहले क़ुर्बानियों की आदत डालने के लिए तहरीक-ए-जदीद का निज़ाम ही है इस तरफ़ भी तवज्जा देनी होगी। अतः इस तरफ़ तवज्जा करें।

अल्लाह तआला जमाअत के आसूदा हाल वर्ग को भी इस तरफ़ तवज्जा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कुछ अच्छा कमाने वाले बहुत तवज्जा करते हैं लेकिन अभी इस में मज़ीद लोगों को शामिल करने की जो अपने वसायल के मुताबिक़ चंदा दें बहुत गुंजाइश है। ग़रीब तो जैसा कि मैंने कहा क़ुर्बानी में बहुत बढ़ गया है लेकिन अमीरों को भी इस तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए।

अब मैं पिछले साल के आदाद-ओ-शुमार भी पेश कर देता हूँ। तहरीक-ए-जदीद के फल का पहले मैं बता दूं जो हमें नज़र आए। पहले क्या इबतेदा में तो हम कादियान से बाहर नहीं निकल रहे थे या हिंदुस्तान तक थोड़े से फैले हुए लेकिन अब दुनिया के 220 देशों में मसाजिद की कुल संख्या नौ हज़ार तीन सौ से ऊपर है। मिशन हाऊसों की संख्या तीन हज़ार चार-सौ से ऊपर है।

और अभी दर्जनों मसाजिद बन रही हैं। मिशन हाऊस भी बन रहे हैं निर्माण अधीन हैं।

मुबल्लग़ीन की संख्या और मौअल्लेमीन की संख्या दुनिया में पाँच हज़ार के क़रीब है।

ये भी बढ़ रही है। अल्लाह के फ़ज़ल से क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद भी हो रहे हैं। सतत्तर (77) भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। लिटरेचर छप रहा है। मुख़्तलिफ़ भाषाओं में लिटरेचर का अनुवाद हो रहा है और बेशुमार काम उस के ज़रीया से हो रहा है जो तहरीक-ए-जदीद के ज़रीया से काम के शुरू होने से शुरू हुआ। गो इस में बाक़ी चंदे भी शामिल हुए हैं लेकिन तहरीक-ए-जदीद का भी बहुत बड़ा किरदार है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब मैं नए साल का ऐलान करता हूँ। तहरीक-ए-जदीद का उनानवे (89) वर्ष 31अक्तूबर को इख़तेताम पज़ीर हुआ और अब हम नव्वे (90) साल में दाख़िल हो रहे हैं।

इस साल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमात आलमगीर को 17.20 मिलियन पाऊंड की क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। अल्हम्दुलिल्ला और बावजूद दुनिया के मआशी हालात के पिछले साल से सात लाख उनचास हज़ार पाऊंड ज़्यादा है।

जमात जर्मनी इस दफ़ा भी दुनिया-भर की जमाअतों में पहले नंबर पर है। सम्मान अपना बरक़रार रखा हुआ है।

क्रंसीयों के रेट दुनिया में मआशी हालात की वजह से बहुत ज़्यादा प्रभवित हुए पाकिस्तान में भी लेकिन उमूमी तौर पर हर एक ने अपनी क़ुर्बानी के मयार को मुक़ामी तौर पर बढ़ाया है। पाकिस्तान के इलावा जो पहली दस पोज़ीश्नें हैं उनमें जर्मनी जैसा कि मैंने कहा वह तो मुकम्मल तौर पर अव्वल है। हर एक से ऊपर है। नंबर एक पर जर्मनी है। फिर बर्तानिया है। फिर कैनेडा है। ये अब तीसरे नंबर पर आ गए हैं। अमरीका चौथे नंबर पर चला गया है। पांचवें नंबर पर मिडल ईस्ट की जमाअतें हैं। छठे नंबर पर भारत है। सातवें पर आस्ट्रेलिया है। आठवें पर इंडोनेशिया है। नौवीं पर फिर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है और दसवीं पर घाना है यहां भी करंसी बहुत ज़्यादा डी वैल्यू हुई है लेकिन इस के बावजूद घाना ने अपनी दसवीं पोज़ीशन इस साल भी बरक़रार है।

जो जमाअतें छोटी हैं उनमें काबिल-ए-ज़िक्र आयरलैंड, मारीशस, हॉलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, न्यूज़ीलैंड, कज़ाकिस्तान, जॉर्जिया इत्यादि हैं।

अफ्रीकन देशों में नुमायां पोज़ीशन प्राप्त वाले हैं घाना, मारीशस, नाईजेरिया, बुर्कीना फासो, तनज़ानिया, गेम्बया, योगाँडा, लाइबेरिया, सैरालियून, बेनिन शामिल होने वालों की मजमूई संख्या सोला लाख सैंतीस हज़ार से पार कर गई है।

और इस में ज़्यादा काम करने वाले जो देश हैं वे गिनी कनाकरी, जमैका, किर्गीज़स्तान, ज़ेमबिया, नेपाल, घाना, कीनीया, तनज़ानिया, कोंगोकिंशासा, कोंगो बराज़ालियोन, नाईझेरिया, सेनेगाल, आवरीकोस्ट और मिडल ईस्ट की एक जमाअत शामिल है।

जर्मनी की पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें रोड्र मार्क (Rodermark) रोडगाओ (Rodgau) कील। ओसना ब्रूक(Osnabrück) पिनबर्ग (Pinneberg) नियूस् (Neuss) नेडा (Nidda) कोलोन (Köln) मह्दी आबाद। फ्लोर्स हाइम (Florsheim)।

और इमारतें जो हैं इन में हैमबर्ग (Hamburg)नंबर एक पर। फिर फ्रैंकफ़र्ट (Frankfurt) ग्रोस गैराओ (Gross-Gerau)वेज़ बादिन (Wiesbaden) डटसन बाख (Dietzenbach) रीडशटड(Riedstadt) रज़लज़ हाइम(Russelheim) मोरफ़लडन (Mörfelden) वाल डार्फ। डामशटड (Darmstadt) मन हाइम (Mannheim)।

बर्तानिया के पहले पाँच रीजनज़ में बैतुल फ़तह नंबर एक। फिर इस्लामाबाद। मिडलैंडज़ (Midlands) मस्जिद फ़ज़ल और बैतुल अहसान।

बड़ी जमाअतें जो बर्तानिया की हैं उनमें फ़ारनहम (Farnham) वोस्टरपार्क (Worcester Park) साउथ चीम (South Cheam) इस्लामाबाद। वॉलसॉल (Walsall) ईश (Ash) गिलंघम(Gillingham) आलडर साउथ (Aldershot South) (Ewell) ब्रैडफोर्ड नॉर्थ छोटी जमाअतों में सपन वैली (Spen Valley) सवानज़ी Swansea) नॉर्थ हैंपटन (North-Hampton) नॉर्थ वेल्ज़ (North Wales) न्यू पोर्ट (Newport)

कैनेडा की इमारात में वान (Vaughan) नंबर एक पर। फिर कैलगरी (Calgary) पीस विलेज (Peace Village) वेनकोवर (Vancouver) मिसिस सागा (Mississauga) टोरांटो (Toronto)

छोटी जमाअतें कैनेडा की हैं हैमिल्टन माओंटन (Hamilton Mountain) आटवा

ईस्ट (Ottawa East) ब्रैडफोर्ड ईस्ट (Bradford East) हैमिल्टन वैस्ट (Hamilton West) मोण्ट्रियाल वैस्ट (Montreal West) विनिपिंग (Winnipeg) रजायना (Regina) लाउड मिनिस्टर (Lloydminster) ऐबटस फ़ोर्ड (Abbotsford)

अमरीका की जमाअतें हैं मेरी लैंड (Maryland) नंबर एक पर। नॉर्थ वर्जीनिया (North Virginia) लास एंजलेस (Los Angeles) सेइटल (Seattle) शिकागो (Chicago) सेलेकोन वैली (Silicon Valley) डेट्रॉइट (Detroit) हीवसटन Houston) अवश् कोष (Oshkosh) नॉर्थ जर्सी (North Jersey) साउथ वर्जीनिया (South Virginia) (Central Jersey) डैलस (Dallas)

पाकिस्तान उमूमी वसूली के लिहाज़ से अव्वल नंबर पर लाहौर है। फिर दोयम रब्वाह है सोइम कराची।

ज़िलों में फैसलाबाद नंबर एक पर है। फिर गुजरांवाला। फिर गुजरात। उम्रकोट। हैदराबाद। मीरपुर ख़ास। लोधरां। बहावलपुर। कोटली आज़ाद कश्मीर जहलुम।

वसूली के एतबार से पाकिस्तान की शहरी जमाअतों में इमारत टाउन शिप लाहौर। इमारत अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर। इमारत दारुल ज़िकर लाहौर। इमारत अज़ीज़ आबाद कराची। इमारत मुग़ल पूरा लाहौर। मुल्तान। इमारत बैतुल् फ़ज़ल फैसलाबाद। कोयटा। पेशावर।

छोटी जमाअतें जो हैं वहां की उनमें खोखर ग़र्बी, चविंडा, कोट शरीफ़ आबाद, बशीर आबाद सिंध, खारियाँ, हयात आबाद, पिंडी भागो, दारुल फ़ज़ल किन्नरी, नवाज़ आबाद फ़ार्म, ख़ैरपुर इंडिया के जो दस सूबाजात हैं उनमें नंबर एक पर केराला। फिर तामिल नाडू। कर्नाटक। तिलंगाना। जम्मू और कश्मीर। ओडीशा। पंजाब। बंगाल। दिल्ली। महाराष्ट्रा।

क़ुर्बानी के लिहाज़ से दस जमाअतें। कोइम्बटोर (तामिल नाडू)। फिर कादियान। फिर हैदराबाद। कालीकट। मंजीरी। मेलापालम। बैंगलौर। कलकत्ता। कैरोलाई। केरंग।

आस्ट्रेलिया की पहली दस जमाअतें : मेलबर्न लाँगवार्न Melbourne Lang warrin मेलबर्न बेरोक Melbourne Berwick मारसिडन पार्क Marsden Park पेनरथ Penrith प्रथ Perth एडीलाइड वैस्ट Adelaide West कासल हिल Castle Hill बर्ज़ बिन लोगन ईस्ट Brisbane Logan East पैरा माटा Parramatta मेलबर्न क्लाउड Melbourne Clyde यह उनकी दस जमाअतें हैं।

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बरकत अता फ़रमाए और ये लोग पहले से बढ़कर क़ुर्बानियां देने वाले हों।

फ़लस्तीनियों को हमेशा दुआओं में याद रखें। उन्हें न भूलें। औरतें और बच्चे जिस ज़ुलम की चक्की में पिस रहे हैं अल्लाह तआला जल्द उनकी रिहाई के सामान फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

अतः यह वाक़िया हमें तहज्जुद पढ़ने की तरफ़ तवज्जा दिलाने के लिए याद रखना चाहिए। और खासतौर पर मुरब्बियान और वाकफ़ीन ज़िंदगी और ओहदेदारान को इस तरफ़ ख़ास तवज्जा देनी चाहिए। रातों की दुआएं ही हैं जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल को ज़्यादा खींचती हैं और आजकल तो दुनिया को तबाही से बचाने के लिए उनकी खासतौर पर ज़रूरत है।

फिर वाक़ियात में ग़ज़व-ए-बनू केनका वर्णन आता है जो दो हिज्री में हुई। इस के बारे में लिखा है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना हिज्रत कर जाने के बाद अरब के कुफ़्फ़ार का मुआमला एक जैसा न रहा। वे तीन किस्मों में बट चुके थे। एक वे थे जिनसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शर्त पर सुलह कर ली थी कि वह न तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करेंगे और न ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मनों की मदद करेंगे। यह मुआहिदा करने वाले यहूद के तीनों क़बायल बनू कुरेज़ा, बनू नज़ीर और बनू केनका में थे। दूसरे वे थे जिन्हों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अदावत की, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जंग की और वह क़ुरैश थे। तीसरे वे लोग थे जिन्हों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ दिया। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंजाम के मुंतज़िर थे जैसे अरब के दीगर क़बायल। उनकी सूरत-ए-हाल भी एक जैसी नहीं थी। उनमें कुछ ऐसे थे जो दिल ही दिल में यह चाहते थे कि मुस्लमानों को ग़लबा हासिल हो जाए जैसे क़बीला बनू खज़ा था। बाअज़ लोगों का मुआमला उसके विपरीत था जैसे बनू बकर के लोग थे। कुछ ऐसे भी थे जो ज़ाहिर तौर पर मुस्लमानों के साथ थे लेकिन अंदर ख़ाना नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मनों का साथ देते थे। ये मुनाफ़क़ीन थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब यहूद से मुआहिदा किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके मध्य मुआहिदा लिखा गया। हर क़ौम अपने हलीफ़ के साथ मिल गई। अब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने और उनके माबैन अमान नामा लिखा। इन पर बहुत सी शरायत आयद कीं। उनमें से एक शर्त यह थी कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ किसी दुश्मन की मदद नहीं करेंगे।

(सब्लुल हुदा वर रिशाद भाग 4 पृष्ठ 179 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.) यह तो मुआहिदा था। अब बनू केनक़ा की जो फ़िल्ला-अंगेज़ी थी उस के बारे में तारीख़ में जो हवाले आते हैं इस में इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि शअस बिन केस नामी एक बूढ़ा शख़्स जिसका दिल मुस्लमानों के बारे में कीना और हसद से भरा हुआ था। एक मर्तबा ओस और ख़ज़रज से संबंध रखने वाले कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो एक मज्लिस में इकट्ठे बैठे गुफ़्तगु कर रहे थे कि शअस बिन क़ैस का इधर से गुज़र हुआ। उसने जब उन्हें ज़माना-ए-जाहिलीयत की दुश्मनी भुला कर इस्लाम की बदौलत आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करते और सुलह सफ़ाई के साथ मिल-जुल कर बैठते देखा तो वे जल कर रह गया। बनू केला अर्थात ओस और ख़ज़रज के सरदार इस शहर में मुत्तहिद हो चुके थे। उसने बेसाख़ता बनू केला, ओस और ख़ज़रज के इन सरदारों को कहा जो मुत्तहिद हो गए थे कि अल्लाह की क़सम! जब उनके मुअज़्ज़िज़ लोग मुत्तहिद हो गए तो हमारे लिए यहां उनके साथ रहने का कोई ठिकाना नहीं। भड़काने की कोशिश की। इस के साथ एक यहूदी नौजवान था। उसने उसे यह हुक्म दिया कि तुम उनके पास जाओ और उनके साथ बैठ जाओ। फिर उनके सामने जंग बुआस और इस से पहले के वाक़ियात का वर्णन छेड़ो और इसके मुताल्लिक़ उन्होंने आपस में जो अशआर कहे थे उनमें से भी कुछ शेअर सुनाओ। जंग बुआस ज़माना-ए-जाहिलीयत में ओस और ख़ज़रज के दरमयान बरपा हुई थी जिसमें ओस को ख़ज़रज पर कामयाबी हासिल हुई थी। इस वक़्त ओस का सरदार हुज़ैर बिन सीमाक आशाहली था। यह हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हो का वालिद था। ख़ज़रज का सरदार अम्र बिन नुमान बयाज़ी था। ये दोनों इस जंग में मारे गए थे। इस जवान यहूदी ने मुस्लमानों में बैठ कर वही वर्णन छेड़ा और आग भड़काई। ओस और ख़ज़रज के सोए हुए पुराने जज़बात फिर भड़क उठे और वह मुश्तइल हो गए। उनके दरमयान तू तो मैं मैं शुरू हो गई। वह आपस में झगड़ने और एक दूसरे पर फ़ख़र जताने लगे। बात इस क़दर बढ़ गई कि दोनों क़बीलों में से एक एक आदमी आमने सामने घुटनों के बल बैठ गए और आपस में तकरार करने लगे। मुक़ाबला बढ़ गया। ओस की तरफ़ से केज़ी थे और ख़ज़रज की तरफ़ से जब्बार बिन सख़्र। बेहस के दौरान उनमें से एक ने दूसरे से कह दिया कि अगर तुम चाहो तो हम इस जंग को अब दुबारा छेड़ कर ताज़ा कर दें। इसलिए दोनों फ़रीक़ गुस्सा में आगए और बोले हम तैयार हैं। अब एक तरफ़ मुस्लमान हो चुके हैं। दूसरी तरफ़ यह जहालत भी साथ चल रही है। और फिर ये कहने लगे कि तुम्हारे वादे की जगह हुर्रा है। मदीना दो हुररों के दरमयान एक हुर्रा है। हुर्रा स्याह पथरीली ज़मीन को कहते हैं और मशरिक़ की जानिब हुर्रा व अकम है और उसको हुर्रा बनू क़ुरैज़ा भी कहते हैं। दूसरा अहर्रा अल् बुवयरा है जो मग़रिब की जानिब है। एक मशरिक़ की जानिब एक मग़रिब की जानिब। दोनों (यानी हुर्रा मदीना) के दरमयान में तीन मील का फ़ासिला है। साथ ही यह शोर बरपा हो गया। हथियार हथियार इसके बाद माहौल इंतेहाई गर्म हो गया और दोनों तरफ़ से ज़ोर-ओ-शोर से जंग की तैयारियां होने लगीं। दोनों क़बीलों के लोग वक़्त मुक़र्ररा पर हुर्रा की तरफ़ निकल पड़े। क़रीब था कि एक ख़ूँरेज़ जंग शुरू हो जाती लेकिन अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस सारी सूरत-ए-हाल की इत्तिला पहुंच गई। ख़बर सुनते ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौरन मुहाजिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ लेकर ओस और ख़ज़रज के लोगों के पास तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निहायत हकीमाना अंदाज़ में इन सबको मुख़ातब करते फ़रमाया :

अल्लाह अल्लाह मेरे होते हुए जाहिलियत की पुकार? वह भी इस के बाद कि अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत नसीब फ़रमाई है। इस के ज़रीया से तुम्हें इज़्ज़त बख़शी है। तुम से जाहिलियत के असरात का ख़ातमा फ़र्मा दिया है। तुम्हें कुफ़्र से निजात दिलाई है और तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी है।

इन चीज़ों के बावजूद अब तुम यह जहालत कर रहे हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस गुफ़्तगु का उन पर ऐसा ज़बरदस्त असर हुआ कि उन्होंने अपने फ़ेअल पर सख़्त नदामत का इज़हार किया और रोना शुरू कर दिया। ओस और ख़ज़रज के लोग जो एक दूसरे से लड़ने झगड़ने के लिए इकट्ठे हुए थे एक दूसरे से गले मिले। फिर समा-ओ-ताअत का मुज़ाहरा करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ वापस आ गए। यह जीवनी इब्ने हशाम की तफ़सील है।

(जीवनी इब्ने हशशाम पृष्ठ 385-386 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

(फ़र्हंग जीवनी पृष्ठ 101-102 ज़व्वार अकैडमी कराची)

यहूद की तरफ़ से मुआहिदा की ख़िलाफ़वरज़ी के बारे में लिखा है कि जब ग़ज़व--ए-बदर में अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को शानदार फ़तह अता फ़रमाई तो उन

लोगों की सरकशी खुल कर सामने आ गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों से उनका हसद ज़ाहिर हो गया। अपनी इस जलन और बुग़ज़ की वजह से उन्होंने अपने मुआहिदे को ख़त्म कर दिया। उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि मुहम्मद! आप ख़्याल करते हैं कि हम आपकी क़ौम जैसे हैं। आप ख़ुद-फ़रेबी में मुबतला न हों कि आपने एक ऐसी क़ौम से मुक़ाबला किया जो जंग से अनाड़ी और नावाक़िफ़ है और आपको उन पर ग़लबा का अवसर मिल गया अर्थात जंग बदर की तरफ़ इशारा कर के कहा कि मक्का के काफ़िरों को तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिकस्त दे दी हम ऐसे नहीं हैं। हम बहुत बहादुर हैं। अल्लाह की क़सम! अगर हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पता चल जाएगा कि मर्द तो हैं और यहूद के तीनों क़बायल में से जिन्हों ने सबसे पहले मुआहिदे की ख़िलाफ़वरज़ी और ग़द्दारी की वह बनू केनक़ा के यहूदी थे।

उनकी मुस्लमानों के साथ जो छेड़-छाड़ थी इस शरारत के बारे में यह एक वाक़िया भी लिखा है कि जो एक मुस्लमान औरत का

है। लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उनकी अदावत के इज़हार के साथ साथ यह वाक़िया भी हुआ कि एक अंसारी की बीवी अपना तिजारती सामान लेकर बनू केनक़ा के बाज़ार में आई जिस में ऊंट और बकरियां इत्यादि थीं ताकि यह माल फ़रोख़्त कर के नफ़ा हासिल करे। यह माल उसने बनू केनक़ा के बाज़ार में फ़रोख़्त किया और इसके बाद वहीं एक यहूदी सुनार के पास बैठ गई कोई ज़ेवर इत्यादि लेने के लिए। उसने अपने बदन और चेहरे को छुपाया हुआ था। कुछ ओबाश यहूदियों ने इस से चेहरा ज़ाहिर करने पर इसरार किया जिस पर उसने इंकार कर दिया। इस पर दुकानदार सुनार ने उठकर उस के निक़ाब का एक कोना चुपके से इस की पुश्त की तरफ़ किसी चीज़ से बांध दिया या एक रिवायत में यूं भी है कि उसने ख़ामोशी से उसकी चादर का एक सिरा एक कांटे या कील में उलझा दिया। औरत को इस बात का पता न चल सका। जब वह औरत जाने के लिए खड़ी हुई तो कपड़ा उलझा हुआ होने की वजह से खुल गया और इस का नंग ज़ाहिर हो गया। इस पर यहूदियों ने क़हक़हे लगाए। औरत ने उनकी इस बेहूदगी पर चीख़ना शुरू कर दिया। क़रीब ही एक मुस्लमान गुज़र रहा था उसने जैसे ही यहूदियों की यह शरारत देखी वह यहूदी सुनार की तरफ़ झपटा और तलवार से उस को क़तल कर दिया। यह देखकर यहूदियों ने इस मुस्लमान पर हमला किया और उसे क़तल कर डाला। इस वाक़िया के बाद मुस्लमानों में बनू केनक़ा के यहूदियों के ख़िलाफ़ सख़्त ग़ाम-ओ-ग़ुस्सा पैदा हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीलों को फ़रमाया कि इस किस्म की हरकतों के लिए हमारा और उनका मुआहिदा नहीं हुआ था। हज़रत उबादा बिन समात रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों का साथी हूँ और उन काफ़िरों के मुआहिदे से बरी होता हूँ।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 284 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 514 दारुल कुतुब इल्मिया 2001ई.) बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू केनक़ा को समझाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने बजाय समझने के खुली धमकी देनी शुरू कर दी।

इस की तफ़सील यूं लिखी है कि बनू केनक़ा को जमा करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे गिरोह यहूद अल्लाह से ऐसी तबाही नाज़िल होने से बचने की कोशिश करो जैसी बदर के अवसर पर क़ुरैश के ऊपर नाज़िल हुई है। इसलिए मुतीअ-ओ-फ़रमांबर्दार बन जाओ क्योंकि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजा हुआ रसूल हूँ और इस हक़ीक़त को तुम अपनी किताब में दर्ज पाते हो और इस अह्द को भी जो अल्लाह ने तुमसे लिया था। उन्होंने कहा हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आप शायद यह समझते हैं कि हम भी आपकी क़ौम वालों की तरह हैं। इस धोखा में न रहिए क्योंकि अब तक आपको ऐसी ही क़ौम से वास्ता पड़ा है जो जंग और इस के तरीक़ नहीं जानते। लिहाज़ा आपने उन्हें आसानी से ज़ेर कर लिया लेकिन ख़ुदा की क़सम अगर आपने हमसे जंग की तो आपको पता चल जाएगा कि कैसे बहादुरों से पाला पड़ा है। एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब ग़ज़व-ए-बदर के अवसर पर यहूद के अहद तौड़ने का इलम हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद को बनू केनक़ा के बाज़ार में जमा कर के या तंबी फ़रमाई थी।

बहरहाल यह तंबीया की थी। इस पर उनका यह जवाब था। इस के बाद बनू केनक़ा के यहूद वहां से जा कर क़िला बंद हो गए। यह सारी बातें हुईं तो वह चले गए और अपने क़िला में चले गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी तरफ़ रवाना हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू लुबाब रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में अपना क़ायम मक़ाम बनाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा सफ़ैद रंग का था और उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो उठाए हुए थे। बनू केनक़ा का मुहासिरा किया गया। इस की तफ़सील में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पंद्रह दिन तक बनू केनक़ा के यहूदियों का सख़्त मुहासिरा किए रखा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ग़ज़वा के लिए शवाल की पंद्रह तारीख़ को रवाना हुए और ज़ुल् क़ादा के चांद तक रहे।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 285 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 179 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

अल्लाह तआला ने उनके दिलों में मुस्लमानों का रोब पैदा फ़र्मा दिया। बनू केनक़ा के इन यहूदियों में चार-सौ जंगजू थे जो क़िला की हिफ़ाज़त पर मामूर थे और तीन सौ ज़िरह पोश थे। आख़िर मुहासिरे से तंग आकर यहूद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख़ास्त की कि हमारा रास्ता छोड़ दें तो हम मदीना से जला-वतन हो कर हमेशा के लिए चले जाऐंगे और सिर्फ हमारी औरतों और बच्चों को हमारे लिए छोड़ दें जिन्हें हम अपने साथ ले जाएं और बाक़ी माल-ओ-दौलत आप रख लें और माल में हथियार इत्यादि भी शामिल होंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूद की यह बात क़बूल फ़र्मा ली और उन्हें मदीना से निकल जाने का हुक्म दिया। जीवनी अल् हलबिया में इस तरह है।

(उद्धृत अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 285 - 287 मकतबा दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

लेकिन जीवनी की अक्सर कुतुब में यह भी लिखा है। अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल के हवाले से यह रिवायत है कि इस अवसर पर वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बार-बार हाज़िर हुआ। वह क्योंकि बनू केनक़ा का हलीफ़ था इसलिए उसने बार-बार सिफ़ारिश और इल्तिजा की और मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इस अमर का इज़हार किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू केनक़ा को माफ़ कर दें। उनको क़तल न करें और उन्हें जाने न दें और उन्हें बख़श दें।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भग 4 पृष्ठ 179-180 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(सीरत इब्ने हशशाम पृष्ठ 514 दारुल कुतुब इल्मिया 2001ई.)

(शरह अल्ज़रक़ानी अलल् मवाहेबुल दुनिया भाग 2 पृष्ठ 351 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

इस रिवायत से यह तास्सुर पैदा होता है कि गोया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके क़तल का इरादा फ़रमाया था और यह कि अब्दुल्लाह बिन उबै की नियमित सिफ़ारिश से उनको माफ़ किया गया था लेकिन यह दरुस्त नहीं है।

कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी औरतों, बच्चों या उन लोगों को क़तल करने का इरादा नहीं फ़रमाया। दरहक़ीक़त इस तरह की जो रिवायात हैं वह मशकूक हैं। इसलिए ऐसी रिवायात पर मुक़दमा करते हुए एक इतिहासकार सय्यद बरकात अहमद हैं। उनकी किताब में लिखा है कि यहूद के हथियार डाल देने के बाद जब अब्दुल्लाह बिन ऊबे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और बोला मेरे आदमियों के लिए नरमी का बरताव किया जाएगा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरा सत्यानास हो मुझे छोड़ दे। इब्न उबेय ने जवाब दिया हरगिज़ नहीं। वल्लाह! मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जाने नहीं दूँगा जब तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे आदमियों के साथ नरमी का बरताव नहीं करेंगे। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको तलवार के नीचे कर देंगे। ख़ुदा की क़सम मुझे पूरा यक़ीन है कि हालात तबदील हो कर रहेंगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छी बात है। तो तुम ही उन्हें ले जाओ। इब्ने इसहाक़, वाक़दी और इब्न-ए-साद तीनों इस क़िस्सा को वर्णन करते हैं। इन तीनों को पढ़ कर यह अंदाज़ा होता है कि गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अब्दुल्लाह बिन उबेय का कुछ असर था लेकिन ख़ुद अब्दुल्लाह बिन उबेय के सिफ़ारशी शब्द मिलते जुलते मालूम होते हैं। इब्ने इसहाक़ के वर्णन में इस का क़तअन इज़हार नहीं होता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई ऐसी बात फ़रमाई हो जिस से यह नतीजा निकाला जा सके कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू केनक़ा को तलवार के नीचे कर देने का इरादा कर चुके थे। एक मुर्ख़ से तो यह साबित नहीं होता। वाक़दी के हाँ इस इरादा की तरफ़ इशारा ज़रूर

मिलता है और इसी बात को इब्ने साद ने भी दुहराया है लेकिन इस अवसर पर हमें यह बात ज़हन में ज़रूर रखनी चाहिए कि :

जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक सयासी राहनुमा भी थे लेकिन दुश्मनों के साथ बेजा सख़्ती का मुआमला कभी नहीं करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशद्दुद को नापसंद करते थे और मैदान-ए-जंग में भी अगर जाते तो बाव्जाह मजबूरी जाते थे और वहां भी ख़्वाह-मख़ाह ख़ूँरेज़ी से परहेज़ थे।

(उद्धरित रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और यहूद हिजाज़ अज़ सय्यद बरकात अहमद पृष्ठ 98-99 मक्तबा आलिया लाहौर)

बहरहाल मुहासरा तो हुआ था और उन्होंने पनाह भी मांगी थी। इसलिए बनू केनक़ा की जला-वतनी भी हुई। इस की तफ़सील इस प्रकार है। इस यहूदी क़बीला की दरख़ास्त के मुताबिक़ उनको जला-वतनी करने का फ़ैसला किया गया और यहूद को मदीना से जला-वतनी करने की ज़िम्मेदारी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबादा बिन समात रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द फ़रमाई और मदीना से तीन दिन में निकल जाने की मोहलत दी। इसलिए वह तीन दिन में मदीना से चले गए, निकल गए। एक कथन यह है कि यहूद ने अबू उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो से मज़ीद मुहलत तलब की लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक घंटे की मज़ीद मोहलत नहीं दी और अपनी निगरानी में जिला-वतन किया। ये लोग यहां से निकल कर अज़ के इलाक़े में चले गए जो शाम की तरफ़ एक शहर है। एक कथन यह भी है कि जला--वतनी करने पर हज़रत मुहम्मद बिन मसलम रज़ियल्लाहु अन्हो को मामूर फ़रमाया था। ऐन-मुमकिन है कि दोनों को यह ज़िम्मेदारी सपुर्द की हो।

बहरहाल जब वे लोग चले गए तो यहूद के घरों से काफ़ी हथियार मिले क्योंकि ये दूसरे यहूदियों में से सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे ज़्यादा बहादुर और जंगजू लोग थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके हथियारों में से अपने लिए तीन कमानें, दो ज़िरहें ,तीन तलवारें और तीन नेज़े मुंतख़ब फ़रमाए। कमानों के नाम कतूम, रोहा और बेयज़ा। कतूम ग़ज़व-ए-अहद में टूट गई थी। दो ज़िरहें जिन के नाम सग़दी और फ़िज़ा हैं। इसी तरह तीन नेज़े और तीन तलवारें मुंतख़ब फ़रमाएं। एक तलवार को क़लई दूसरे को बत्तार कहा जाता था। तीसरी का कोई नाम नहीं था। जीवनी अल् हल्बिया की यह रिवायत है।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 287 मकतबा दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 1 पृष्ठ 165 अल्मकतबतुल असरिया)

बनू केनक़ा के ग़ज़वे का वर्णन जीवनी ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में यूं है "जिस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से हिज्रत करके मदीना में तशरीफ़ लाए थे उस वक़्त मदीना में यहूद के तीन क़बायल आबाद थे। उनके नाम बनू केंका, बनू नज़ीर और बनू करेज़ा थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में आते ही इन क़बायल के साथ अमन-ओ-अमान के मुआहिदे कर लिए और आपस में सुलह और अमन के साथ रहने की बुनियाद डाली। मुआहिदा की दृष्टि से फ़रीक़ैन इस बात के ज़िम्मेदार थे कि मदीना में अमन-ओ--अमान क़ायम रखें और अगर कोई बैरूनी दुश्मन मदीना पर हमला-आवर होतो सब मिलकर उसका मुक़ाबला करें। शुरू शुरू में तो यहूद इस मुआहिदा के पाबंद रहे और कम से कम ज़ाहिरी तौर पर उन्हों ने मुस्लमानों के साथ कोई झगड़ा पैदा नहीं किया लेकिन जब उन्होंने देखा कि मुस्लमान मदीना में ज़्यादा इक़्तेदार हासिल करते जाते हैं तो उन के तेवर बदलने शुरू हो गए और उन्होंने मुस्लमानों की इस बढ़ती हुई ताक़त को रोकने का तहय्या कर लिया और इस ग़रज़ के लिए उन्होंने हर किस्म की जायज़ व नाजायज़ तदाबीर इख़्तेयार करना शुरू कीं। यहाँ तक कि उन्होंने इस बात की कोशिश से भी दरेग़ नहीं किया कि मुस्लमानों के अंदर फूट पैदा करके ख़ाना-जंगी शुरू करा दें। इसलिए रिवायत आती है कि एक अवसर पर क़बीला ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग इकट्ठे बैठे हुए बाहम मुहब्बत और सहयोग से बातें कर रहे थे कि बाअज़ फ़ित्ना परदाज़ यहूद ने इस मज्लिस में पहुंच कर जंग-ए-बुआस का तज़किरा शुरू कर दिया। यह वह ख़तरनाक जंग थी जवान दो क़बायल के दरमयान हिज्रत से चंद साल क़बल हुई थी और जिस में ओस और ख़ज़रज के बहुत से लोग एक दूसरे के हाथ से मारे गए थे। जैसे पहले भी तफ़सील से वर्णन हो चुका है। "इस जंग का वर्णन आते ही बाअज़ जोशीले लोगों के दिलों में पुरानी याद ताज़ा हो गई और गुज़श्ता अदावत के मंज़र आँखों के सामने फिर गए। नतीजा यह हुआ कि बाहम नोक झोंक और तान व तशनीअ से गुज़र कर नौबत यहां तक पहुंच गई कि इसी मज्लिस में मुस्लमानों के अंदर तलवार खिच गई मगर ख़ैर गुज़री कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बरवक़्त उस की इत्तिला मिल गई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजेरीन की एक जमाअत के साथ फ़ौरन अवसर पर तशरीफ़ ले आए और फ़रीक़ैन को समझा बुझा कर ठंडा किया और फिर मलामत भी फ़रमाई कि तुम मेरे होते हुए जाहिलियत का तरीक़ इख़्तेयार करते हो और ख़ुदा की इस नेअमत की क़दर नहीं करते कि उसने इस्लाम के ज़रीया तुम्हें भाई भाई बना दिया है। अंसार पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहत का ऐसा असर हुआ कि उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए और वह अपनी इस हरकत से शर्मिंदा हो कर एक दूसरे से बग़लगीर हो गए।

जब जंग-ए-बदर हो चुकी और अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से मुस्लमानों को बावजूद उनकी क़िल्लत और बेसरोसामानी के क़ुरैश के एक बड़े जरार लश्कर पर नुमायां फ़तह दी और मक्का के बड़े बड़े अमायद ख़ाक में मिल गए तो मदीना के यहूदियों की आतिश-ए-हसद भड़क उठी और उन्हों ने मुस्लमानों के साथ खुल्लम खुल्ला नोक झोंक शुरू कर दी और मज्लिसों में बरमला तौर पर कहना शुरू किया कि क़ुरैश के लश्कर को शिकस्त देना कौन सी बड़ी बात थी हमारे साथ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मुक़ाबला हो तो हम बता दें कि किस तरह लड़ा करते हैं। यहाँ तक कि एक मज्लिस में उन्होंने ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह पर इसी किस्म के अलफ़ाज़ कहे। इसलिए रिवायत आती है कि जंग-ए-बदर के बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दिन यहूदियों को जमा करके उनको नसीहत फ़रमाई और अपना दावा पेश करके इस्लाम की तरफ़ दावत दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस पुरअमन और हमदर्दाना तक़रीर का रसाए यहूद ने इन अलफ़ाज़ में जवाब दिया कि "हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तुम शायद चंद क़ुरैश को क़त्ल करके मग़रूर हो गए हो। वे लोग लड़ाई के फ़न से नावाक़िफ़ थे। अगर हमारे साथ तुम्हारा मुक़ाबला हो तो तुम्हें पता लग जाए कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं।' यहूद ने सिर्फ आम धमकी पर ही इकतिफ़ा नहीं की बल्कि ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल के भी मंसूबे शुरू कर दिए थे क्योंकि रिवायत आती है कि जब इन दिनों में तल्हा बिन बरा जो एक मुख़लिस सहाबी थे फ़ौत होने लगे तो उन्हों ने वसीयत की कि अगर मैं रात को मरूँ तो नमाज़ जनाज़ा के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला न दी जाए ता ऐसा न हो कि मेरी वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यहूद की तरफ़ से कोई हादिसा गुज़र जाए। अल-ग़र्ज़ जंग-ए-बदर के बाद यहूद ने खुल्लम खुल्ला शरारत शुरू कर दी और चूँकि मदीना के यहूद में बनू केनका सब में ज़्यादा ताक़तवर और बहादुर थे इस लिए सबसे पहले उन्ही की तरफ़ से अहद शिकनी शुरू हुई। इसलिए मौरख़ीन लिखते कि .. मदीना के यहूदियों में से सबसे पहले बनू केनक़ा ने इस मुआहिदा को तोड़ा जो उन के और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरमयान हुआ था और बदर के बाद उन्होंने बहुत सरकशी शुरू कर दी और बरमला तौर पर बुग़्ज़ और हसद का इज़्हार किया और अहदोपैमाँ को तोड़ दिया।

परंतु बावजूद इस किस्म की बातों के मुस्लमानों ने अपने आक़ा की हिदायत के अधीन हर तरह से सब्र से काम लिया और अपनी तरफ़ से कोई पेश-दस्ती नहीं होने दी मगर हदीस में है कि : इस मुआहिदा के बाद जो यहूद के साथ हुआ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ास तौर पर यहूद की दिलदारी का ख़्याल रखते थे।"

उनकी तरफ़ से दुश्मनी का रव्यया था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से दिलदारी का रव्यया। "इसलिए एक दफ़ा एक मुस्लमान और एक यहूदी में कुछ इख़्तेलाफ़ हो गया। यहूदी ने हज़रत मूसा की समस्त नबियों पर फ़ज़ीलत वर्णन की। सहाबी को उस पर ग़ुस्सा आया और उस ने यहूदी के साथ कुछ सख़्ती की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अफ़ज़ल रसूल वर्णन किया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस वाक़िया की इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ हुए और इस सहाबी को मलामत फ़रमाई और कहा कि "तुम्हारा यह काम नहीं कि तुम ख़ुदा के रसूलों की एक दूसरे पर फ़ज़ीलत वर्णन फिरो।" और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मूसा की एक जुज़वी फ़ज़ीलत वर्णन कर के इस यहूदी की दिलदारी फ़रमाई परंतु बावजूद इस दलदाराना सुलूक के यहूदी अपनी शरारत में तरक़्क़ी करते गए और अंततः ख़ुद यहूद की तरफ़ से ही जंग का बायस पैदा हुआ और उन की दिल की दुश्मनी उनके सीनों में समा न सकी और यह इस तरह हुआ कि एक मुस्लमान ख़ातून बाज़ार में एक यहूदी की दुकान पर कुछ सौदा ख़रीदने के लिए गई।' जैसा कि तफ़सील से वर्णन हो चुका है। "बाअज़ शरीर यहूदियों ने जो उस वक़्त उस दुकान पर बैठे हुए थे उसे निहायत ओबाशाना तरीक़ पर छेड़ा और ख़ुद दुकानदार ने यह शरारत की कि उस औरत के तेबंद के निचले कोने को उस की बे-ख़बरी की हालत में किसी कांटे वग़ैरा

से उस की पीठ के कपड़े से टांग दिया। नतीजा यह हुआ कि जब वह औरत उनके ओबाशाना तरीक़ को देखकर वहां से उठ कर लौटने लगी तो वह नंगी हो गई। इस पर इस यहूदी दुकानदार और उस के साथियों ने ज़ोर से एक क़हक़हा लगाया और हँसने लग गए। मुस्लमान ख़ातून ने शर्म के मारे एक चीख़ मारी और मदद चाही। इत्तिफ़ाक़ से एक मुस्लमान उस वक़्त क़रीब मौजूद था। वह लपक कर उस स्थान पर पहुंचा और बाहम लड़ाई में यहूदी दुकानदार मारा गया। जिस पर चारों तरफ़ से इस मुस्लमान पर तलवारें बरस पड़ीं और वह ग़यूर मुस्लमान वहीं पर ढेर हो गया। मुस्लमानों को इस वाक़िया का इलम हुआ तो ग़ैरत क़ौमी से उनकी आँखों में ख़ून उतर आया और दूसरी तरफ़ यहूद जो इस वाक़िया को लड़ाई का बहाना बनाना चाहते थे हुजूम करके इकट्ठे हो गए और एक बवाल की सूरत पैदा हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू केनका के सरदारों को जमा कर के कहा कि यह तरीक़ सही नहीं।" अब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तरीक़ा देख लें। किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोशिश की कि किसी तरह यह मुआमला ठंडा हो। "तुम इन शरारतों से बाज़ आ जाओ और ख़ुदा से डरो। उन्होंने बजाय उस के कि इज़हार-ए-अफ़सोस करते और माफ़ी के तालिब बुनते सामने से निहायत विद्रोही उत्तर दिए।" अर्थात बड़ी सरकशी और ना-फ़रमानी वाला जवाब दिया "और फिर वही धमकी दोहराई कि बदर की फ़तह पुर-ग़ुरूर न करो। जब हमसे मुक़ाबला होगा तो पता लग जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। नाचार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक जमईयत को साथ लेकर बनू केनक़ा के क़िलों की तरफ़ रवाना हो गए। अब यह आख़िरी अवसर था कि वह अपने अफ़आल पर पशेमान होते।' जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रवाना हुए तब भी माफ़ी मांग लेते तो मुआमला ख़त्म हो जाता। "परंतु वे सामने से जंग पर आमादा थे। अल-ग़र्ज़ जंग का ऐलान हो गया और इस्लाम और यहूदियत की ताक़तें एक दूसरे के मुक़ाबिल पर निकल आएं। उस ज़माना के दस्तूर के मुताबिक़ जंग का एक तरीक़ यह भी होता था कि अपने क़िलों में महफ़ूज़ हो कर बैठ जाते थे और फ़रीक़ मुख़ालिफ़ क़िलों का मुहासिरा कर लेता था और अवसर पर गाहे गाहे एक दूसरे के ख़िलाफ़ हमले होते रहते थे। यहाँ तक तो मुहासिरा करने वाली फ़ौज क़िला पर क़बज़ा करने से मायूस हो कर मुहासिरा उठा लेती थी और या महसूरीन की फ़तह समझी जाती थी और या महसूरीन मुक़ाबला की ताब न ला कर क़िला का दरवाज़ा खोल कर अपने आपको फ़ातेहीन के सपुर्द कर देते थे। इस अवसर पर भी बनू केनका ने यही तरीक़ इख़्तेयार किया और अपने क़िलों में बंद हो कर बैठ गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका मुहासिरा किया और पंद्रह दिन तक बराबर मुहासिरा जारी रहा। अंततः जब बनू केनका का सारा ज़ोर और ग़रूर टूट गया तो उन्हों ने इस शर्त पर अपने क़िलों के दरवाज़े खोल दिए कि उनके अम्वाल मुस्लमानों के हो जाऐंगे परंतु उनकी जानों और उन के परिजनों पर मुस्लमानों का कोई हक़ नहीं होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शर्त को मंज़ूर फ़र्मा लिया क्योंकि जबकि मूसवी शरीयत की दृष्टि से ये सब लोग कतल के योग्य थे और मुआहिदा की दृष्टि से उन लोगों पर मूसवी शरीयत का फ़ैसला ही जारी होना चाहिए था परंतु उस क़ौम का या पहला जुर्म था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रहीम और करीम तबीयत इंतेहाई सज़ा की तरफ़ जो एक आख़िरी ईलाज होता है इबतेदाई क़दम पर मायल नहीं हो सकती थी लेकिन दूसरी तरफ़ ऐसे बद-अहद और मुआनिद क़बीला का मदीना में रहना भी एक मार आसतीन के पालने से कम न था। विशेषता जब ओस और ख़ज़रज का एक मुनाफ़िक़ गिरोह पहले से मदीना में मौजूद था और बैरूनी जानिब से भी तमाम अरब की मुख़ालेफ़त ने मुस्लमानों का नाक में दम कर रखा था। ऐसे हालात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही फ़ैसला हो सकता था कि बनू केनका मदीना से चले जाएं। यह सज़ा उनके जुर्म के मुक़ाबिल में और तथा ज़माना के हालात को मलहूज़ रखते हुए एक बहुत नरम सज़ा थी और दरअसल इस में सिर्फ ख़ुद हिफ़ाज़ती का पहलू ही मद्द-ए-नज़र था। अन्यथा अरब की ख़ाना-ब-दोश अक़्वाम के नज़दीक नक़ल-ए-मकान कोई बड़ी बात न थी। विशेषता जबकि किसी क़बीला की जायदादें ज़मीनों और बाग़ात की सूरत में न हों जैसा कि बनू केनक़ा की नहीं थीं।"कोई उनकी जायदादें ऐसी नहीं थीं जो गैर मन्कूला हों। ज़मीनें या उस किस्म की जायदादें जिन पर उनका इन्हिसार हो। "और फिर सारे के सारे क़बीला को बड़े अमन-ओ-अमान के साथ एक जगह छोड़कर दूसरी जगह जाकर आबाद होने का अवसर मिल जाए। इसलिए बनू केनक़ा बड़े इतमीनान के साथ मदीना छोड़ कर शाम की तरफ़ चले गए। उनकी रवानगी के मुताल्लिक़ ज़रूरी एहतिमाम और निगरानी वग़ैरा का काम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबी उबादा बिन समात रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द फ़रमाया था जो उनके हलफ़ा में थे।" यह उनके अर्थात बनू केनक़ा के हलीफ़ थे। "इसलिए उबादा बिन समात रज़ियल्लाहु अन्हो चंद मंज़िल तक बनू केनका के साथ गए और फिर उन्हें हिफ़ाज़त के साथ आगे रवाना करके वापस लौट आए। माल-ए-ग़नीमत जो मुस्लमानों के हाथ आया वह सिर्फ़ आलात-ए-हर्ब और आलात-ए-पेशा ज़रगरी पर मुश्तमिल था।

बनू केनका के मुताल्लिक़ बाअज़ रिवायतों में वर्णन आता है कि जब उन लोगों ने अपने क़िलों के दरवाज़े खोल कर अपने आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सपुर्द कर दिया उन का अहद तौड़ना और बग़ावत और शरारतों की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरादा उनके जंगजू मर्दों को क़तल करवा देने का था परंतु अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सलूल रईस मुनाफ़क़ीन की सिफ़ारिश पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा तर्क कर दिया लेकिन मुहक़्क़िक़ीन ने इन रिवायात को सही तस्लीम नहीं किया क्योंकि जब दूसरी रिवायात में यह सरीहन वर्णित है कि बनू केनक़ा ने इस शर्त पर दरवाज़े खोले थे कि उनकी और उनके परिजनों की जान बख़शी की जाएगी तो यह हरगिज़ नहीं हो सकता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस शर्त को क़बूल कर लेने के बाद दूसरा तरीक़ फ़रमाते" और इस शर्त को तोड़ देते। "जबकि बनू केनका की तरफ़ से जान बख़शी की शर्त का पेश होना इस बात को ज़ाहिर करता है कि वह ख़ुद ही समझते थे कि उनकी असल सज़ा कतल ही है परंतु वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रहम के तालिब थे और यह वादा लेने के बाद अपने क़िले का दरवाजा खोलना चाहते थे कि उनको क़तल की सज़ा नहीं दी जावेगी लेकिन जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी रहीम अल् नफ़सी से उन्हें माफ़ कर दिया था परंतु मालूम होता है कि ख़ुदा तआला की नज़र में ये लोग अपनी बदआमाली और जरायम की वजह से अब दुनिया के पर्दे पर ज़िंदा छोड़े जाने के काबिल नहीं थे। इसलिए रिवायत आती है कि जिस जगह ये लोग जिलावतन हो कर गए थे वहां उन्हें अभी एक साल का अरसा भी न गुज़रा था कि उनमें कोई ऐसी बीमारी इत्यादि पड़ी कि सारे का सारा क़बीला उसका शिकार हो कर पैवंद ख़ाक हो गया।

ग़ज़व-ए-बनू केनका की तारीख़ के विषय मे किसी क़दर इख़तेलाफ़ है। वाक़दी और इब्ने साद ने शवाल दो हिज्री वर्णन की है और इतिहासकारों ने' बाद में आने वाले इतिहासकारों ने ' ज़्यादा-तर ईसी का अनुसरण किया है। लेकिन इब्ने इसहाक़ और इब्ने हशशाम ने उसे ग़ज़वा स्वैक के बाद रखा है जो मुस्लिमा तौर पर माहज़ी अल्हजा दो हिज्री के शुरू में हुआ था और हदीस की एक रिवायत में यह भी इशारा मिलता है कि ग़ज़व बनू केनका हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा के रुख़स्ताना के बाद हुआ था क्योंकि इस रिवायत में यह वर्णन किया गया है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने वलीमा की दावत का ख़र्च मुहय्या करने के लिए यह तजवीज़ की थी कि बनू केनका के एक यहूदी ज़रगर को साथ लेकर जंगल में जाएं और वहां से अज़ख़र घास लाकर मदीना के ज़र-गरों के पास फ़रोख़त करें। जिससे यह साबित होता है कि हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा के रुख़स्ताना के वक़्त जो आम मुअर्रिख़ीन के नज़दीक ज़ुल हज्जा दो हिज्री में हुआ था अभी तक बनू केनका मदीना में ही थे। इन वजूहात की बिना पर' हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि "मैंने ग़ज़वा बनू केनका को ग़ज़व-ए-स्वैक और हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा के रुख़स्ताना के बाद अंत 2 हिज्री में रखा है।

... इस अवसर पर यह वर्णन भी फ़ायदा से खाली नहीं होगा कि ग़ज़व-ए-बनू केनका का कारण वर्णन करते हुए मिस्टर मार्गो लैस ने अपनी तरफ़ से एक अजीबो-गरीब बात बना कर लिखी है जिसका क़तअन किसी रिवायत में इशारा तक नहीं आता। बुख़ारी में एक रिवायत आती है कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ने शराब के नशा में (उस वक़्त तक अभी शराब हराम नहीं थी) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के वे ऊंट मार दिए थे जो उन्हें जंग-ए-बदर की ग़नीमत में हासिल हुए थे। इस मुनफ़रद वाक़िया को बग़ैर किसी किस्म की तारीख़ी सनद के ग़ज़व-ए-बनू केनका के साथ जोड़ कर मिस्टर मार्गो लैस रक़म तराज़ हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू केनका पर इस ग़रज़ से चढ़ाई की थी कि ता उस की ग़नीमत से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के इस नुक़्सान की तलाफ़ी करें।' कोई बे-तुकी बात जोड़ी है। "तारीख़ नवेसी में यह जुर्रत ग़ालिबन अपनी मिसाल आप ही है और फिर लुतफ़ यह है कि मिस्टर मार्गो लैस इस बात को तस्लीम करते हैं कि मैंने ईआह बात अपनी तरफ़ से क़ियास करके ज़ायद की है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 457 से 462)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 14 December 2023 Issue No. 50

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हवाले तो कोई नहीं मिले। लेकिन मेरा ख़्याल है कि इसलिए और कोई ज़रीया नहीं था कि दो ऊंटों की क़ीमत के लिए एक क़बीले से पूरी जंग की जाए। अजीब सोचें हैं उनकी। मुस्तश्रिक़ीन (प्राच्य) या ग़ैर मुस्लिम तारीख़ दान जो हैं मुस्लमानों के बुग़ज़ और अदावत में इतने बढ़े हुए हैं कि तारीख़ को तोड़-मरोड़ कर पेश करना उनके लिए बड़ा आसान है और यह अक्सर जगह नज़र आता है। बहरहाल इस ज़िमन में बाक़ी बातें इन शा आइन्दा।

आजकल दुनिया के जो हालात हैं मैं दुआ के लिए उनकी याददेहानी दुबारा करवा दूं।

हम्मास और इसराईल की जंग और इस के नतीजा में मासूम फ़लस्तीनी औरतों और बच्चों की शहादतें बढ़ती जा रही हैं।

जंग के हालात जिस तेज़ी से शिद्दत इख़्तेयार कर रहे हैं और इसराईल की हुकूमत और बड़ी ताक़तें जिस पालिसी पर अमल करती नज़र आ रही हैं इस से तो आलमी जंग अब सामने खड़ी नज़र आ है।

और अब तो बाअज़ मुस्लमान मुल्कों के सरबराहों ने भी खुल के यह कहना शुरू कर दिया है। रूस, चीन ने भी और इसी तरह मग़रिबी तजज़िया निगारों ने भी यह कहना और लिखना शुरू कर दिया है कि अब जंग का यह दायरा वसीअ होता नज़र आ रहा है।

अगर फ़ौरी हिक्मत वाली पालिसी इख़्तेयार न की गई तो दुनिया की तबाही है।

सब कुछ ख़बरों में आ रहा है। आप सब के सामने सूरत-ए-हाल है इसलिए अहमदियों को दुआओं की तरफ़ ख़ास तवज्जा देनी चाहिए।relax न हो जाएं। कम से कम हर नमाज़ में एक सजदा या कम से कम किसी एक नमाज़ में एक सजदा तो ज़रूर उसके लिए अदा करना चाहिए। इस में दुआ करनी चाहिए।

मग़रिबी दुनिया का तो किसी भी देश का सरबराह हो वह इस मुआमले में इन्साफ़ से काम लेना नहीं चाहता। न इस बारे में कुछ कहने की जुर्रत रखता है। अहमदी इन बहसों में न पढ़ें कि किस देश का वज़ीर-ए-आज़म या सरबराह अच्छा है और किस का अच्छा नहीं और इस को यह नहीं कहना चाहिए। मुस्लमानों को इस के ख़िलाफ़ नहीं बोलना चाहिए। यह सब फ़ुज़ूल बातें हैं।

जब तक कोई जुर्रत से जंग बंदी की कोशिश नहीं करता वह बहरहाल दुनिया को तबाही की तरफ़ ले जाने का ज़िम्मेदार है

अतः अपने माहौल में दुआओं के साथ इस बात को फैलाने की कोशिश करें कि ज़ुलम को रोको। अगर किसी अहमदी के किसी से ताल्लुक़ात हैं तो उसे समझाएँ। यही जुर्रत है। यही अल्लाह तआला के हुक्म पर अमल करने का मयार है। इसराईली हुकूमत के नुमाइंदे कहते हैं कि हम्मास ने हमारे मासूमों को मारा, हम बदला लेंगे और यह बदला अब तमाम हदें पार कर गया है। जितना इसराईली जानों को नुक़्सान हुआ है जो वर्णन की जाती हैं इस से चार पाँच गुना ज़्यादा फ़लस्तीनी जानों का नुक़्सान हो चुका है

अगर उनका हम्मास को ख़त्म करने का टार्गेट है जैसे यह कहते हैं तो फिर उनसे दूओ बदूओ जंग करें। औरतों, बच्चों और बूढ़ों को क्यों निशाना बना रहे हैं।

फिर पानी, ख़ुराक, ईलाज सबसे उन लोगों को महरूम कर दिया है। हुक़ूक़-ए-इन्सानी और जंगों के उसूल के इन हुकूमतों के तमाम दावे यहां आकर ख़त्म हो जाते हैं। हाँ बाअज़ इस तरफ़ तवज्जा भी दिलाते हैं जैसे पिछले दिनों अमरीका के साबिक़ सदर ओबामा ने कहा था कि जंग अगर करनी भी है तो जंगी उसूलों को सामने रखना चाहिए। सिवीलियन पर ज़ुलम नहीं होना चाहिए।

यू एन (UN) के सैक्रेटरी जनरल साहिब भी बोले थे। इस पर इसराईली हुकूमत ने शोर मचा दिया। तो बाक़ी दुनिया के अमन के दावेदारों ने जो अपने आपको सबसे बड़ा अमन को क़ायम करने वाला समझते हैं या चैंपीयन समझते हैं सैक्रेटरी जनरल के वर्णन की ताईद में कुछ नहीं बोले बल्कि उन्होंने नापसंदीदगी का इज़हार किया है। बहरहाल हालात ख़तरनाक हैं और ख़तरनाक तर होते जा रहे हैं।

मग़रिबी मीडीया एक तरफ़ की ख़बरें तो बढ़ा चढ़ा कर देता है और दूसरी तरफ़ की एक कोने में छोटी सी ख़बर। जैसे पिछले दिनों रिहाई पाने वाली जो औरतें थीं उनमें से एक औरत ने कहा कि मुझ से क़ैद में बेहतर सुलूक हुआ। इस की ख़बर तो एक कोने में चली गई और जो यह वर्णन है कि हम्मास की क़ैद जहन्नुम थी उसे मुस्तक़िल बड़ी ख़बर का हिस्सा बना के पेश किया जाता है।

इन्साफ़ तो यह है कि सब सूरत-ए-हाल सामने रखी जाए फिर दुनिया को अपना फ़ैसला करने दें कि कौन ज़ालिम है, कौन मज़लूम है और किस हद तक यह जंग जायज़ है और कहाँ जा के यह ख़त्म होनी चाहिए। दुनिया के सामने सारी सूरत-ए-हाल आनी चाहिए न कि एक तरफ़ा राय। बहरहाल हमें दुआओं की तरफ़ बहुत तवज्जा देनी चाहिए। ज़ुलम को ख़त्म करने के लिए अपने दायरे में कोशिश भी करनी चाहिए और दुआ भी मुस्लमान मज़लूमों के लिए भी और मुस्लमान हुकूमतों को एक जामा और देर पा मंसूबा बंदी के लिए भी दुआ करनी चाहिए।

मुस्लमानों की मुश्किलात दूर होने के लिए हमें ख़ास दर्द रखना चाहिए। हम तो इस मसीह मौऊद को मानने वाले हैं जिसने मुस्लमानों के लिए बावजूद उस के कि हमें उनसे तकलीफ़ें पहुँचती रहती हैं अपने जज़बात का इज़हार यूं किया कि :

"اے دل تو نیز خاطر ایناں نگاہ دار
کاخر کنند دعوئے حب پیمبرؐ"

(अज़ाला-ए-औहाम हिस्सा अव्वल, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 182)

हे दिल तू उन लोगों का लिहाज़ रख। आख़िर वे मेरे पेग़मबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का दावा हैं। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा है कि हम मुस्लमानों के लिए बहुत दुआ करें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ भी दे और मुस्लमानों को भी और दुनिया को अक़ल भी दे।

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad